साप्ताहिक

बुलंद गोंदिया

खबरों का आईना

प्रधान संपादक : **अभिषेक चौहान** । संपादक : **नवीन अग्रवाल**

E-mail : **bulandgondia@gmail.com** | E-paper : **bulandgondia.net** | Office Contact No.: **7670079009** | R. No.: **MAH-HIN-10169**

वर्ष : 2 | अंक : 21 | गोंदिया : गुरुवार, 30 दिसम्बर 2021 से 5 जनवरी 2022 | पृष्ठ : 4 | मूल्य : रु. 5

घाट निलामी में लेटलतीफी से रेती चोरी के मामले बढ़े

निलामी नहीं होने से पर्यावरण को हो रहा नुकसान । ६८ घाटों का सर्वे कर ३२ घाटों को पर्यावरण समिति के पास मंजूरी के लिए भेजा

बुलंद गोंदिया – जिले में रेती घाटों की निलामी प्रक्रिया समय पर नहीं होने के कारण रेती चोरी के मामले तो बढ़ ही रहे है, लेकिन सबसे अधिक नुकसान पर्यावरण को पहुंच रहा है। इतना ही नहीं निलामी प्रक्रिया की लेटलतीफी के कारण गोंदिया जिला प्रशासन को करोड़ों रुपए के राजस्व का नुकसान हो रहा है। यदि समय पर रेती घाटों की निलामी हो जाती है तो पर्यावरण के साथ चोरी के मामलों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। जिला खनिकर्म विभाग ने आगामी आर्थिक वर्ष के लिए ६८ घाटों का सर्वे कर ३२ घाटों को पर्यावरण समिति के पास मंजूरी के लिए भेजा है।

गौरतलब है कि जिले में लगभग ६८ रेती घाटो का सर्वे जिला खनिकर्म विभाग ने करके ३२ घाटों का प्रस्ताव पर्यावरण समिति के पास मंजूरी के लिए भेजा है। मंजूर रेती घाटों से उत्खनन कर जिले सहित अन्य जिलों में रेती का परिवहन किया जाता है। इन रेती घाटों से जिला खनिकर्म विभाग को करोड़ों रुपए का राजस्व प्राप्त होता है। लेकिन समय पर निलामी प्रक्रिया नहीं होने के कारण रेती का उत्खनन अवैध रुप से किया जाता है। जिससे पर्यावरण को नुकसान तो पहुंचता ही है, लेकिन सबसे अधिक घाटा राजस्व को पहुंचता है। बताया जा रहा है कि गोंदिया तहसील के महालगांव, डांगोर्ली, बनाथर, जीरणटोला, सतोना, बिरसोला, पुजारीटोला, देवरी, मुरदाड़ा, साईटोला

किन्ही, तेढ़वा, तिरोड़ा तहसील में घाटकुरोड़ा-१, घाटकुरोडा-२, चांदोरी, बिरोली, पिपरिया, मांडवी, बोंडरानी, कवलेवाड़ा, सड़क अर्जुनी तहसील में सावंगी-१, सावंगी-२, सौंदड़, पलसगांव राका, पिपरी, घाटबोरी तेली, कोदामेडी, आमगांव तहसील में मानेकसा, घाटटेमनी व अर्जुनी मोरगांव तहसील में बड़ेगांव बंध्या व सिंगसराहन रेती घाटों का समावेश है। लेकिन इन रेती घाटों की फिलहाल निलामी नहीं होने के कारण बंद पड़े हुए है। रेती की मांग अधिक होने से अधिकांश घाटों से रेती का अवैध उत्खनन कर रेती बेची जा रही है।

रेती की अवैध तस्करी के लिए कौन जिम्मेदार, माफिया कौन?

इमारत निर्माण कार्य से लेकर सभी बांधकामों में गौण खनिज के रुप में रेती का महत्वपूर्ण उपयोग है। जिससे शासन को प्रतिवर्ष करोड़ों रुपए का राजस्व प्राप्त होता है। किंतु गत कुछ वर्षों से रेती घाटों की नीलामी की प्रक्रिया जटिल होने से जिले में बड़े पैमाने पर रेती का अवैध उत्खनन कर परिवहन किया जाता है। जिसमें शासन को करोड़ों रुपए का नुकसान होने के साथ-साथ बड़े पैमाने पर रेती का व्यवसाय करने वाले माफियाओं के दल तैयार हो चुके हैं। किंतु इस पर प्रश्न यह निर्माण होता है कि रेती का असली माफिया कौन है? क्योंकि प्रशासन की मुक सहमति के बिना प्रतिदिन हजारों वाहनों के द्वारा अवैध रुप से रेती का परिवहन नहीं किया जा सकता। यदि नियमानुसार नीलामी कर घाटों को दिया जाता है तो इससे सिर्फ शासन को ही राजस्व प्राप्त होता है तथा अन्य लोगों व संबंधित अधिकारियों को इसमें कुछ भी प्राप्त नहीं हो पाता। किंतु यदि रेती की अवैध तस्करी की जाए तो सभी को करोड़ों रुपए का लाभ होता है। जिसमें सभी विभागों को रेती का अवैध व्यवसाय करने वालों द्वारा नियमित रुप से रकम पहुंचाई जाती है। जिसमें राजस्व विभाग में पटवारी से लेकर उपविभागीय अधिकारी तथा वरिष्ठ अधिकारी, पुलिस विभाग में पुलिस हवलदार से लेकर वरिष्ठ अधिकारी तक परिवहन विभाग तथा कुछ स्थानों पर वन विभाग के चपरासी से लेकर वरिष्ठस्तर तक भी रकम पहुंचाई जाती है। जिससे यह प्रश्न निर्माण हो रहा है कि रेती का असली माफिया कौन हैं?

पर्यावरण संरक्षण के नाम पर समिति द्वारा मंजूरी दी जाती किंतु प्रत्यक्ष में पर्यावरण को अधिक नुकसान

रेती घाटों से रेती के उत्खनन की नीलामी की प्रक्रिया के पूर्व सर्वप्रथम जिला खनिकर्म विभाग द्वारा रेती घाटों का जिला स्तर पर सर्वे कर पात्र रेती घाट की सूची मंजूरी के लिए पर्यावरण विभाग कि समिति के पास भेजा जाता है, जो पर्यावरण संरक्षण के नाम पर जांच कर घाटों को मंजूरी देती है। लेकिन समिति की कार्यप्रणाली इतनी लचर है कि समय पर घाटों को मंजूरी नहीं मिल पाती। रेती की आवश्यकता निरंतर होने से इसे रोका नहीं जा सकता। इसके फलस्वरुप बड़े पैमाने पर रेती का अवैध उत्खनन कर परिवहन किया जाता है। जिससे पर्यावरण को और अधिक नुकसान पहुंचता है। साथ ही शासन को करोड़ों रुपए का नुकसान होता है। इस संदर्भ में पर्यावरण समिति की कार्यप्रणाली का फिर से मूल्यांकन करना वर्तमान समय में जरुरी हो गया है। अन्यथा पर्यावरण को बचाने के नाम पर कहीं पर्यावरण को और अधिक नुकसान न होने लगे।

मंजूरी मिलते ही होगी निलामी प्रक्रिया

६८ घाटों का सर्वे किया जा चुका है, उनमें से ३२ रेती घाटों की मंजूरी के लिए पर्यावरण समिति को प्रस्ताव भेजा गया है। मंजूरी मिलते ही निलामी प्रक्रिया शुरु की जाएगी।

– सचिन वाढवे
जिला खनिकर्म अधिकारी, गोंदिया

रेती तस्करों पर लगाम लगाने जिलाधिकारी एक्शन मोड पर

जिले में रेती चोरी के मामले बढ़ रहे है। रेती तस्करी के मामलों पर अब जिलाधिकारी ने एक्शन मोड ले ली है। तस्करों पर पैनी नजर तथा रेती घाटों पर निगरानी रखने के लिए विशेष दल तैयार कर कार्रवाई करने हेतु पुलिस व विशेष वाहनों की व्यवस्था की गई है। जिलाधिकारी नयना गुंडे ने आदेश दिया है कि रेती की चोरी पर नियंत्रण पाने के लिए आवश्यक उपाय योजना तैयार कर विशेष दल के माध्यम से कार्रवाई की मुहीम शुरु की जाए। जिले के अनेक रेती घाटों पर अवैध उत्खनन कर रेती की चोरी की जा रही है। अधिकांश इस तरह की चोरी रात के दौरान की जाती है। जिसे गंभीरता से लेते हुए जिलाधिकारी नयना गुंडे द्वारा रेती घाटों पर जाकर प्रत्यक्ष रुप से जांच की जा रही है। चोरियों पर नियंत्रण पाने के लिए जिलाधिकारी गुंडे द्वारा जिलाधिकारी कार्यालय में विशेष बैठक बुलाकर उपाय योजना तैयार की है। जिसमें कहा गया है कि रेती चोरी पर नियंत्रण पाने के लिए राजस्व विभाग का विशेष दल तैयार किया गया है। वहीं कार्रवाई के लिए पुलिस विभाग की मदद लेकर कार्रवाई हेतु विशेष वाहन की भी व्यवस्था की गई है। जिलाधिकारी गुंडे ने यह भी निर्देश दिए है कि रेती चोरी पकड़ने की बजाए रेती घाटों से रेती की चोरी ना हो इस पर अधिक जोर दिया जाए तथा आवश्यक उपाय योजना तैयार कर कार्रवाई शुरु की जाए। सभा में अप्पर जिलाधिकारी राजेश खवले, जिला खनिकर्म अधिकारी सचिन वाढवे, अधिक्षक संजय धार्मिक तथा विशेष दल के सभी अधिकारी, कर्मचारी प्रमुखता से उपस्थित थे।

विद्युत मोटर पंप चोरों का गिरोह फंसा पुलिस के जाल में

५ आरोपियों से ६ लाख रुपए का माल जप्त

बुलंद गोंदिया – खेतों में लगे विद्युत पर चलनेवाले मोटर पंपो की चोरी की घटनाएं बडे पैमाने पर जिले में घटीत हो रही है। जिला पुलिस ने चोरों के गिरोह को अपने जाल में फांस लेने में सफलता पायी है। २४ दिसंबर को की गई कारवाई में पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके पास से चोरी के विद्युत पंप तथा चौपहिया वाहन जप्त कर लिया गया है। जप्त की गई सामग्री की किमत ६ लाख १० हजार बताई गई।

इस संदर्भ में जानकारी दी गई कि अर्जुनी मोरगांव पुलिस थाना अंतर्गत वडेगांव के किसान ने १७ दिसंबर को शिकायत की थी कि उसका विद्युत मोटर पंप अज्ञातों द्वारा चुरा ली गई है। इसी प्रकार घाटी फलसगांव से भी विद्युत मोटर चुरा लेने की बात बताई गई। लगभग १७ विद्युत मोटर पंप चुराने की जानकारी अर्जुनी मोरगांव पुलिस को दी गई थी। जिससे पुलिस भी सकते में आ गई। जिसे देखते हुए जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देश के तहत अर्जुनी मोरगांव पुलिस ने जांच दल तैयार कर अज्ञात चोरों की तलाश शुरु कर दी। इसी दौरान पांच आरोपियों को विद्युत मोटर पंप सहित गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार किए गए आरोपियों के नाम चंद्रपूर जिले के ब्रम्हपुरी निवासी कन्हैयालाल भुरानी (२९), कुंदनसिंग भुरानी (२७), तिलकसिंग भुरानी (२४), जिरोबा निवासी कान्हासिंग रामगडे (३६) व तेजाबसिंग रामगडे (२८) बताया गया। उनके पास से १ लाख १० रुपए के विद्युत मोटर पंप तथा चोरी के लिए उपयोग में लाई गई चौपहिया वाहन जिसकी किमत ५ लाख रुपए इस प्रकार कुल ६ लाख १० हजार रुपए का माल जप्त किया गया है। पुलिस ने सभी आरोपियों को न्यायालय में पेश किया। न्यायालय ने आरोपियों को २७ दिसंबर तक पुलिस कस्टडी में रखने का आदेश सुनाया है। उपरोक्त कारवाई जिला पुलिस अधीक्षक विश्व पानसरे, अप्पर पुलिस अधीक्षक अशोक बनकर, उपविभागीय पुलिस अधिकारी संकेत देवलेकर के मार्गदर्शन में अर्जुनी मोरगाव पुलिस थाने के थानेदार चंद्रकांत सुर्यवंशी, सहायक पुलिस निरीक्षक सोमनाथ कदम, पुलिस नायक प्रशांत बोरकर, रमेश सेलोकर, गवलीशंकर कोरे, विजय कोटांगले, श्रीकांत मेश्राम, धनंजय शेंडे, दिक्षीत दमाहे, लोकेश कोसरे ने की।

महिला के शरीर में मात्र १.५ मिली रक्त, रक्तदूतों ने दी नई जिंदगी

बुलंद गोंदिया – महिला मरीज जिसके शरीर में मात्र १.५ मिली रक्त होने से उसे बचाना एक चुनौती थी। लेकिन खबर मिलते ही रक्तदूतों ने पीड़िता को ७५० मिली रक्त देकर उसे नई जिंदगी दी है। पीड़ित महिला का नाम गोंदिया निवासी ज्योति रावते (३६) बताया गया है। इस संदर्भ में जानकारी दी गई कि ज्योति रावते यह गरीब परिवार से होकर कुछ दिनों से उसका स्वास्थ्य खराब चल रहा था। स्वास्थ्य में सुधार नहीं होने के कारण सामाजिक कार्यकर्ताओं ने ज्योति को गोंदिया मेडिकल कॉलेज में उपचार हेतु २३ दिसंबर को भरती किया। जब चिकित्सकों ने जांच की तो ज्योति के शरीर में मात्र १.५ मिली रक्त था। रक्त बहुत ही कम होने से उपचार करना भी कठीन हो रहा था। चिकित्सकों ने मरीज को ए-पॉजिटीव रक्त गट की आवश्यकता होने की बात कहीं। लेकिन इस ग्रुप का गोंदिया की एक भी ब्लड बैंक में रक्त नहीं होने से चिकित्सक भी मुश्किल में आ गए। जब इसकी खबर सोच सेवा संस्थान के सौरभ रोकड़े तक पहुंची तो उन्होंने बिना समय गवाएं रक्तदूतों को मेडिकल कॉलेज में तैनात कर दिया। इसी मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की छात्रा स्वाती बोरकर, रक्तदूत विलव वाघाये ने रक्तदान कर महिला को नई जिंदगी प्रदान की। इसके लिए सौरभ रोकड़े, गुणवंत मेश्राम, आकाश मोटवानी ने अहंम भूमिका निभाई।

सरकार बदल गई फिर भी जिले के ५४१ किसानों को नहीं मिला सिंचाई कुआं अनुदान

बुलंद संवाददाता – धडक सिंचन योजना कार्यक्रम तत्कालीन सरकार ने वर्ष २०१६ से शुरु किया था। इस योजना के तहत विदर्भ के १३ हजार किसानों को सिंचाई कुंए का लाभ दिया गया। गोंदिया जिले के सैकडों किसानों ने सिंचाई कुंए का निर्धारित समय में निर्माण किया है। दो वर्ष पूर्व ही किसानों ने कुंओ का काम पूरा करने के बावजूद भी शासन द्वारा किसानों को अनुदान नहीं दिया गया। सरकार बदल गई, लेकिन कुंए की निधि किसानों के बैंक खातों में जमा नहीं हुई। जिसे लेकर लाभार्थी किसानों में सरकार के खिलाफ आक्रोश निर्माण हो गया है। विदर्भ में हमेशा बारिश दगा दे जाती है। जिस कारण धान की फसलों के साथ अन्य मौसमी फसलों को समय पर पानी उपलब्ध नहीं होने के कारण फसल उत्पादन को भारी पैमाने पर नुकसान पहुंचता है। जिसे देखते हुए तत्कालीन सरकार द्वारा वर्ष २०१६ में धडक सिंचन योजना कार्यक्रम शुरु किया। इस योजना के तहत गोंदिया सहित विदर्भ के अन्य जिलों के लाभार्थी किसानों को १३ हजार कुंओं का निर्माण कराने का लक्ष रखा गया था। एक कुंआ निर्माण करने के लिए किसानो को ढाई लाख रुपए का अनुदान दिया जाता है। लेकिन कुंए का पूरा निर्माणकार्य होने के बाद ही किसानों के खातों में अनुदान की राशि जमा की जाती है। गोंदिया जिले के ५४१ किसानों को कुंआ निर्माण करने के आदेश दिए गए थे। आदेश के तहत किसानो ने उधार पर सामग्री खरीदकर निर्धारित समय में कुंओं का निर्माण किया। जिनमें से ४६ कुओं का काम पूर्ण हो चुका है, लेकिन दो वर्ष बित गए अनुदान नहीं दिया गया। किसानों का कहना है कि, सरकार बदल गई। लेकिन किसानो के बैंक खातो में कुंआ अनुदान की राशि जमा नहीं की गई है। जिस कारण किसानो में सरकार के खिलाफ तीव्र असंतोष निर्माण हो गया है।

किसानों पर आर्थीक संकट

सिंचाई कार्यक्रम योजना अंतर्गत कुंआ निर्माण करने के लिए १२ फरवरी २०२० में आदेश दिया गया था। आदेश के तहत खेत में उधार पर सामग्री खरीदकर कुंए का निर्माण किया है। लेकिन अभी तक अनुदान की राशि नहीं दी गई है। फिर से कर्ज लेकर उधार की सामग्री जिस दुकानदार से खरीदी थी, उस दुकानदार को सामग्री की राशि अदा करनी पडी। कई बार कार्यालय के चक्कर काटे हैं, लेकिन राशि उपलब्ध नहीं होने का कारण बताकर लौटा दिया गया है। मेरे सहित अनेक लाभार्थी किसानों पर आर्थीक संकट आन पडा है। लेकिन इस समस्या की ओर ना तो कोई विधायक, ना सांसद और नाही कोई जनप्रतिनिधि ध्यान दे रहा है।

– सोमेश्वर तुरकर, लाभार्थी किसान, कोरणी, गोंदिया

अधिकार दिलाकर रहेंगे

इस योजना के तहत जिले के ५४१ किसानों को आदेश दिया गया था कि अपने खेतों में कुंए बनाए जाए। आदेशों के तहत लाभार्थी किसानों ने कुंए निर्माण किया। लेकिन अभी तक अनुदान की राशि उन्हे नहीं दी गई। इस संदर्भ में कई बार सिंचाई विभाग से चर्चा कर अनुदान की राशि देने की मांग की। इतना ही नहीं तो किसानों का अधिकार दिलाने के लिए सड़क पर उतरकर आंदोलन भी किए है। जब तक किसानों को उनके अधिकार की निधि नहीं मिलती, तब तक सरकार के खिलाफ लड़ाई जारी रखेंगे। हम किसानों को अधिकार दिलाकर ही रहेंगे।

– जितेश राणे, जिलाध्यक्ष काँग्रेस किसान आघाडी

कपड़ों पर जीएसटी बढ़ोतरी का विरोध ५ से १२% हुई जीएसटी

कम नहीं होने पर व्यापारी करेंगे हड़ताल – विनोद चाँदवानी

बुलंद गोंदिया – केंद्र सरकार व वित्त मंत्रालय द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार १ जनवरी २०२२ से कपड़ों पर जीएसटी टैक्स ५ प्रतिशत से बढ़ाकर १२ प्रतिशत किया जाएगा। जिसे लेकर कपड़ा व्यापारियों में नाराजगी उभरकर सामने आई है। जिससे व्यापार कम होने के साथ ही विदेशी कपड़े बिकने लगेंगे व टैक्स की चोरी भी बढ़ेंगी। अगर केंद्र सरकार द्वारा जीएसटी बढ़ोतरी का फैसला वापस नहीं लिया तो सभी जगह व्यापारी इसका विरोध करेंगे। जीएसटी के बढ़ने से व्यापार पर असर होने के साथ-साथ ग्राहकों को भी यह प्रभावित करेंगा। जिससे उन्हें अब और अधिक महंगी कीमतों में कपड़े मिलने लगेंगे। कपड़ों पर ५ प्रतिशत से अधिक टैक्स नहीं होना चाहिए। केंद्र सरकार द्वारा बढ़ाए गए इस टैक्स के विरोध में व्यापारियों द्वारा भारत के प्रधानमंत्री, वित्त मंत्री व कपड़ा मंत्री को निवेदन दिया है। यदि सरकार द्वारा उपरोक्त मांगों को नहीं मांगा गया तो सभी कपड़ा व्यापारियों द्वारा पूर्ण रुप से हड़ताल किए जाने की चेतावनी दी है। इस प्रकार की जानकारी गोंदिया के कपड़ा व्यवसाई विनोद (गुड्डू) चंदवानी द्वारा दी गई है।

बेमौसम बारिश से भारी नुकसान

बुलंद गोंदिया – गोंदिया जिले में २८ दिसंबर की शाम अनेक स्थानों पर जमकर बेमौसम बारिश हुई। साथ ही ओलावृष्टि होने से फसलों के साथ-साथ मकानों को व मवेशियों को भारी नुकसान पहुंचा है। हालांकि इस घटना में किसी भी प्रकार की जनहानि नहीं हुई है। जिले में इस दौरान १७ मकानों को अंशत: नुकसान हुआ।

वहीं ८ मवेशियों के गोटे क्षतिग्रस्त हुए, ६ छोटे मवेशियों की मौत हुई है। इस प्रकार जिले में बेमौसम बारिश के चलते ३४४००० की संपत्तियों को नुकसान पहुंचा है। इसके साथ ही अर्जुनी मोरगांव तहसील में भी बड़े पैमाने पर नुकसान हुआ है। जिसका प्रशासन द्वारा समय पर सर्वे नहीं किया गया है। मकानों, मवेशियों व फसलों के भी नुकसान होने की जानकारी सर्वे के बाद सामने आयेगी। नागरिकों द्वारा मांग की गई है कि जल्द से जल्द सर्वे कर पंचनामा किया जाए।

संपादकिय

बूस्टर डोज़ जरुरी है

ओमिक्रॉन को लेकर जरा सी भी लापरवाही हमारे लिए बहुत बड़े संकट का कारण बन सकती है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, इस नए वेरिएंट के खतरे को देखते हुए जहां बच्चों के लिए टीकाकरण अभियान शुरु करने की जरुरत है, वहीं बूस्टर डोज देने की भी व्यवस्था तत्काल की जानी चाहिए।

कोरोना के नए वेरिएंट ओमिक्रॉन से संक्रमण के मामले देश में चिंताजनक ढंग से बढ़ रहे हैं। महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, केरल और चंडीगढ़ में नए केस पाए जाने के बाद भारत में ऐसे मरीजों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है । कई अन्य देशों में भी इसका फैलाव उतनी ही तेजी से हो रहा है। अब तक ६३ देशों में इसके पहुंचने की डब्ल्यूएचओ पुष्टि कर चुका है। दुनिया में फिलहाल कोरोना संक्रमण के सबसे ज्यादा मामले डेल्टा वेरिएंट के माने जा रहे हैं, जो सबसे पहले भारत में पाया गया था। मगर नए वेरिएंट ओमिक्रॉन के साथ खास बात यह है कि इसका तेज संक्रमण न केवल दक्षिण अफ्रीकी देशों में देखा गया जहां डेल्टा वेरिएंट प्रमुख नहीं है, बल्कि ब्रिटेन जैसे देशों में भी पाया गया, जहां डेल्टा ही प्रमुख वेरिएंट है।

एक्सपर्ट्स के मुताबिक, ओमिक्रॉन के बारे में अभी जो एक बात यकीन के साथ कही जा सकती है, वह है तेजी से फैलने की इसकी क्षमता। यह वैक्सीन के सुरक्षा कवच को भी आसानी से भेदते हुए आगे बढ़ रहा है। इसके लक्षण अभी माइल्ड बताए जा रहे हैं, लेकिन विशेषज्ञ आगाह करते हैं कि आबादी का जो हिस्सा वैक्सीन के सुरक्षा दायरे से बाहर है, उसके संक्रमित होने पर लक्षण पिछले संक्रमण जितने गंभीर भी हो सकते हैं। इस लिहाज से कोरोना की दूसरी लहर के दौरान मिले सबक याद रखे जाने चाहिए। भारत में तो अब भी आबादी का एक बड़ा हिस्सा टीकाकरण के दायरे के बाहर है। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि अपने देश में बच्चों को टीका लगाने का काम अभी शुरु भी नहीं हुआ है। ओमिक्रॉन के बच्चों में भी फैलने को लेकर जानकार खास तौर पर आगाह कर रहे हैं।

ऐसे में साफ है कि ओमिक्रॉन को लेकर जरा सी भी लापरवाही हमारे लिए बहुत बड़े संकट का कारण बन सकती है। वायरोलॉजी के एक्सपर्ट्स के मुताबिक, इस नए वेरिएंट के खतरे को देखते हुए जहां बच्चों के लिए टीकाकरण अभियान शुरु करने की जरुरत है, वहीं बूस्टर डोज देने की भी व्यवस्था तत्काल की जानी चाहिए। बूस्टर डोज के बारे में यह कहा जा रहा है कि तीसरी डोज पहले की दोनों डोज से अलग होनी चाहिए। भारत में चूंकि ज्यादातर लोगों को दोनों डोज कोविशील्ड की लगी हैं, इसलिए तीसरी डोज कोवैक्सीन की हो सकती है। हालांकि इसके अच्छा विकल्प एमआरएनए (मॉडर्ना और फाइजर द्वारा विकसित) वैक्सीन को माना जा रहा है।

जाहिर है, बूस्टर डोज के लिए कोवैक्सीन का उत्पादन तेजी से बढ़ाने या मॉडर्ना और फाइजर जैसी विदेशी कंपनियों के टीकों का बड़े पैमाने पर ऑर्डर बुक करने और उनकी सप्लाई सुनिश्चित करने की जरुरत होगी। बच्चों के टीकाकरण अभियान के लिए भी नीतिगत फैसले लेने होंगे। सरकार को इन सभी पहलुओं पर गौर करते हुए तेजी से आगे बढ़ना होगा ताकि हालात बेकाबू होने की नौबत न आए।

कैलेंडर

वर्ष के दिनों को व्यवस्थित करने के लिए एक प्रणाली

कैलेंडर आयोजन के दिनों की एक प्रणाली है। यह समय, आमतौर पर दिन, सप्ताह, महीने और वर्ष के नाम देकर किया जाता है। एक दिनांक ऐसी प्रणाली के भीतर एकल, विशिष्ट दिन का पदनाम है। एक कैलेंडर ऐसी प्रणाली का एक भौतिक रिकॉर्ड भी है। एक कैलेंडर का अर्थ नियोजित घटनाओं की एक सूची से भी हो सकता है, जैसे कि कोर्ट कैलेंडर या दस्तावेजों की आंशिक या पूरी तरह से कालानुक्रमिक सूची, जैसे कि विल का कैलेंडर।

एक कैलेंडर में अवधि (जैसे कि साल और महीने) आमतौर पर, हालांकि जरुरी नहीं कि, सूर्य या चंद्रमा के चक्र के साथ सिंक्रनाइज़ हो। पूर्व-आधुनिक कैलेंडर का सबसे आम प्रकार चंद्र कैलेंडर था, एक चंद्र कैलेंडर जो कभी-कभार एक अंत:क्रियात्मक महीने को जोड़ता है सौर वर्ष १०४ - से अधिक दीर्घावधि।

व्युत्पत्ति

कैलेंडर शब्द कैलेन्डे से लिया गया है। रोमन कैलेंडर में महीने के पहले दिन की अवधि, शब्द **कॉल आउट** करने के लिए क्रिया कालरे से संबंधित है, यह पहली बार देखे जाने पर अमावस्या के **कॉलिंग** का उल्लेख करता है। लैटिन कैलेंडर का अर्थ था **खाता बही, रजिस्टर** (जैसा कि खातों का निपटान किया गया था और प्रत्येक महीने के कैलेंड पर ऋण एकत्र किए गए थे)। लैटिन शब्द को पुरानी फ्रांसीसी कैलेंडर के रुप में अपनाया गया था और वहां से मध्य अंग्रेजी में १३ वीं शताब्दी के कैलेंडर के रुप में (वर्तनी कैलेंडर प्रारंभिक) आधुनिक है।

इतिहास

सूर्य और चंद्रमा का कोर्स सबसे अधिक हैं, प्राकृतिक, नियमित रुप से आवर्ती घटनाओं के लिए उपयोगी टाइमकीपिंग, इस प्रकार दुनिया भर में पूर्व-आधुनिक समाजों में लूनेशन और वर्ष को आमतौर पर समय इकाइयों के रुप में उपयोग किया जाता था। फिर भी, रोमन कैलेंडर में एक बहुत प्राचीन पूर्व-एट्रुसकेन १० महीने के सौर वर्ष के अवशेष शामिल थे। लेखन प्राचीन निकट पूर्व, के विकास पर निर्भर पहले दर्ज भौतिक कैलेंडर, कांस्य युग मिस्र और सुमेरियन कैलेंडर।

पूर्व कैलेंडर के सिस्टम के पास प्राचीन की एक बड़ी संख्या बेबीलोनियन कैलेंडर लौह युग की तारीख, कैलेंडर प्रणाली के बीच। फारसी साम्राज्य, जिसने बदले में जोरास्ट्रियन कैलेंडर और हिब्रू कैलेंडर को बड़ी संख्या दी। हेलेनिक कैलेंडर ३४५ में विकसित - शास्त्रीय ग्रीस और हेलेनिस्टिक अवधि में प्राचीन रोमन कैलेंडर और विभिन्न हिंदू कैलेंडर।

पुरातनता में कैलेंडर लुनिसोलर दोनों को जन्म दिया। सौर और चंद्र वर्षों को संरेखित करने के लिए इंटरकलेरी महीनों की शुरुआत पर निर्भर करता है। यह अधिकांशत: अवलोकन पर आधारित था, लेकिन खंड-खंड के पैटर्न को एल्गोरिदमिक रुप से मॉडल करने के शुरुआती प्रयास हो सकते थे। जैसा कि खंड २ में लिखा गया था Coligny कैलेंडर

४६ ईसा पूर्व में रोमन कैलेंडर जूलियस सीजर द्वारा सुधार किया गया था।। जूलियन कैलेंडर अब नए चाँद के अवलोकन पर निर्भर नहीं था, लेकिन हर चार साल में एक लीप दिवस शुरु करने के लिए एक एल्गोरिथ्म का पालन किया। इस्लामी कैलेंडर निषेध के अंतर पर आधारित है। इस्लामिक परंपरा में ९ धू अल-हिज्जाह एएच १० ९जूलियन तारीख : ६ मार्च ६३२) को आयोजित धर्मोपदेश के लिए। इसके परिणामस्वरुप एक अवलोकन आधारित चंद्र कैलेंडर था जो सौर वर्ष के मौसम के सापेक्ष बदलता है।

साप्ताहिक राशिफल

मेष : धन संबंधित मामलों के लिए समय अनुकूल चल रहा है, जल्द ही कोई आर्थिक लाभ मिलने की संभावना है। घर के कामों में मदद करने के आपके स्वभाव की सभी तारिफ करेंगे। अपनी पसंदीदा चीजों पर खर्चा करना संतोषजनक साबित होगा। संतुलित आहार और नियमित व्यायाम अधिकांश शारीरिक बीमारियों को दूर रखने में मददगार साबित होगा।

वृषभ : कार्यक्षेत्र पर अपने अधिकारों को बांटना काम करने का सही तरीका साबित होगा जिसके चलते आप पर काम का बोझ कुछ कम होगा। इस सप्ताह खुशखबरी आपका इंतजार कर रही है। शेयर मार्केट में खोया हुआ पैसा वापस मिलने की संभावना है। सरप्राइज गिफ्ट और कैंडल लाइट डिनर से अपने साथी को प्रभावित करेंगे।

मिथुन : किसी खानदानी विरासत के मिलने में समय लग सकता है, इसलिए खुद पर नियंत्रण रखें। प्रेम संबंधों के लिए समय थोड़ा कठिन चल रहा है। नवविवाहित जोड़े एक-दूसरे के साथ समय बिताकर अच्छा महसूस करेंगे। यात्राओं के योग बन रहे हैं। मनपसंद जगह घूमने का मौका मिल सकता है।

कर्क : समाज में आपके द्वारा किए गए प्रयासों की सभी सराहना करेंगे जिसके चलते आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी और पहचान मिलेगी। सैलरी में बढ़ोतरी के आपके अनुरोध को सहानुभूति के सुना जा सकता है। किसी को उधार दिया हुआ पैसा तुरंत वापस मिल जाएगा। पुराने दोस्तों से मिलकर और पुरानी यादें ताजा होंगी।

सिंह : किसी विशेष व्यक्ति से विदेश जाकर मिलने की इच्छा जल्दी ही पूरी होने की संभावना है। इस सप्ताह आप में से कुछ लोग प्रोफेशनली खुद को बेड़ियों में जकड़ा हुआ और असहाय महसूस कर सकते हैं। किसी लोन को पास कराने में आ रहीं समस्याओं के चलते लोन का विचार छोड़ने की सोच सकते हैं। विवेकपूर्ण तरीकों से खर्च करने की आवश्यकता है।

कन्या : कार्यक्षेत्र पर अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के चलते उच्च अधिकारियों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करने में कामयाब होंगे। किसी सामाजिक काम के लिए पैसों का इंतजाम करने में मेहनत करनी पड़ सकती है। प्रॉपर्टी विवाद की संभावना है, इसलिए बेहतर होगा कि आप समय रहते ही इस समस्या का सौहार्दपूर्ण तरीके से समाधान ढूंढने की कोशिश करें।

तुला : इस सप्ताह धन संबंधित चली आ रही समस्या को सुलझाने के लिए समय देने की आवश्यकता होगी। थकान के चलते सुस्ती महसूस कर सकते हैं। आपका साथी इस सप्ताह कुछ समय अकेले रहना चाहते हैं, इसलिए उसकी भावनाओं का सम्मान करें। पढ़ाई में आपसे बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद की जा सकती है।

वृश्चिक : यात्राओं पर जाने के योग बन रहे हैं। शहर से बाहर परिवार के साथ किसी यात्रा पर जाना मजेदार साबित होगा। कुछ खास हासिल करने का लक्ष्य रखने वालों को कोई नहीं रोक सकता। रोमांस के लिए ये सप्ताह संतोषजनक साबित होगा। अपने साथी के कैंडल लाइट डिनर पर जाकर रोमांचित महसूस करेंगे।

धनु : प्रेम संबंधों के लिए समय अनुकूल चल रहा है, अपने साथी के साथ समय बिताना और गिफ्ट देना संतोषजनक साबित होगा। विदेश यात्रा पर जाना मजेदार साबित होगा। रियल स्टेट से जुड़े लोग किसी अच्छी डील को करने में कामयाब होंगे। घर पर कुछ बदलावों के करने के आपके सुझाव का सभी लोग स्वागत करेंगे।

मकर : इस सप्ताह समाज में आपकी लोकप्रियता काफी बढ़ सकती है। करियर के लिए यह सप्ताह काफी उत्कृष्ट साबित होगा। करियर में तरक्की के योग बन रहे हैं। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलने की संभावना है। एक-दूसरे के साथ समय बिताने से साथी के साथ आपके संबंध मजबूत होंगे। इस सप्ताह आपके शुभचिंतक आपका सहयोग करेंगे।

कुंभ : धनलाभ के योग बन रहे हैं। कुछ समय पहले शुरु किए गए किसी व्यवसाय से लाभ मिलने की संभावना है। आप किसी ऐसे व्यक्ति का सही मार्गदर्शन करने में सफल होंगे, जो आप पर पूरा विश्वास कर रहा है। किसी पार्टी या समारोह के निमंत्रण से आपको लोगों से मिलने और अपने व्यावसायिक हितों को आगे बढ़ाने का अवसर मिल सकता है।

मीन : यात्राओं से अच्छा व्यापार मिलने की संभावना है। इस सप्ताह आर्थिक रुप से आप खुद को बेहतर स्थिति में पाएंगे। अपने किसी ड्रीम प्रोजेक्ट में निवेश करने की योजना बना सकते हैं। घर का माहौल शांत और खुशनुमा रहेगा। दोस्तों और करीबियों के आपके घर आने से घर की रौनक बढ़ेगी। प्रेम संबंधों को लेकर ये सप्ताह संतोषजनक रहेगा।

नव वर्ष

नव वर्ष एक उत्सव की तरह पूरे विश्व में अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग तिथियों तथा विधियों से मनाया जाता है। विभिन्न सम्प्रदायों के नव वर्ष समारोह भिन्न-भिन्न होते हैं और इसके महत्व की भी विभिन्न संस्कृतियों में परस्पर भिन्नता है।

पश्चिमी नव वर्ष : नव वर्ष उत्सव ४००० वर्ष पहले से बेबीलोन में मनाया जाता था। लेकिन उस समय नए वर्ष का ये त्यौहार २१ मार्च को मनाया जाता था जो कि वसंत के आगमन की तिथि भी मानी जाती थी। प्राचीन रोम में भी नव वर्षोत्सव के लिए चुनी गई थी। रोम के शासक जूलियस सीजर ने ईसा पूर्व ४५वें वर्ष में जब जूलियन कैलेंडर की स्थापना की, उस समय विश्व में पहली बार १ जनवरी को नए वर्ष का उत्सव मनाया गया। ऐसा करने के लिए जूलियस सीजर को पिछला वर्ष यानि, ईसापूर्व ४६ इस्वी को ४४५ दिनों का करना पड़ा था।

हिब्रू नव वर्ष : हिब्रू मान्यताओं के अनुसार भगवान द्वारा विश्व को बनाने में सात दिन लगे थे। इस सात दिन के संधान के बाद नया वर्ष मनाया जाता है। यह दिन ग्रेगरी के कैलेंडर के मुताबिक ५ सितम्बर से ५ अक्टूबर के बीच आता है।

हिन्दू नव वर्ष : हिन्दुओं का नया साल चैत्र नव रात्रि के प्रथम दिन यानी गुड़ी पड़वा पर हर साल विक्रम संवत के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होता है।

भारतीय नव वर्ष : भारत के विभिन्न हिस्सों में नव वर्ष अलग-अलग तिथियों को मनाया जाता है। प्राय: ये तिथि मार्च और अप्रैल के महीने में पड़ती है। पंजाब में नया साल बैशाखी नाम से १३ अप्रैल को मनाई जाती है। सिख नानकशाही कैलंडर के अनुसार १४ मार्च होला मोहल्ला नया साल होता है। इसी तिथि के आसपास बंगाली तथा तमिल नव वर्ष भी आता है। तेलगु नया साल मार्च-अप्रैल के बीच आता है। आंध्रप्रदेश में इसे उगादी (युगादि = युग + आदि का अपभ्रंश) के रुप में मनाते हैं। यह चैत्र महीने का पहला दिन होता है। तमिल नया साल विशु १३ या १४ अप्रैल को तमिलनाडु और केरल में मनाया जाता है। तमिलनाडु में पोंगल १५ जनवरी को नए साल के रुप में आधिकारिक तौर पर भी मनाया जाता है। कश्मीरी कैलेंडर नवरेह १९ मार्च को होता है। महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा के रुप में मार्च-अप्रैल के महीने में मनाया जाता है, कन्नड नया वर्ष उगाडी कर्नाटक के लोग चैत्र माह के पहले दिन को मनाते हैं, सिंधी उत्सव चेट्रीचंड, उगाड़ी और गुड़ी पड़वा एक ही दिन मनाया जाता है। मदुरै में चित्रैय महीने में चित्रैय तिरुविजा नए साल के रुप में मनाया जाता है। मारवाड़ी नया साल दीपावली के दिन होता है। गुजराती नया साल दीपावली के दूसरे दिन होता है। इस दिन जैन धर्म का नववर्ष भी होता है। लेकिन यह व्यापक नहीं है। अक्टूबर या नवंबर में आती है। बंगाली नया साल पोहेला बैसाखी १४ या १५ अप्रैल को आता है। पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश में इसी दिन नया साल होता है।

इस्लामी नव वर्ष : इस्लामिक कैलेंडर का नया साल मुहर्रम होता है। इस्लामी कैलेंडर एक पूर्णतया चन्द्र आधारित कैलेंडर है जिसके कारण इसके बारह मासों का चक्र ३३ वर्षों में सौर कैलेंडर को एक बार घूम लेता है। इसके कारण नव वर्ष प्रचलित ग्रेगरी कैलेंडर में अलग अलग महीनों में पड़ता है।

००० ००० ००० ००० ००० ०००

नए साल का दिन १ जनवरी को मनाया जाता है, नए साल का पहला दिन ग्रेगोरियन और जूलियन कैलेंडर दोनों के बाद मनाया जाता है। नए साल की छुट्टी अक्सर आतिशबाज़ी, परेड और भविष्य की संभावनाओं को देखते हुए अंतिम वर्ष पर प्रतिबिंब द्वारा चित्रित की जाती है। बहुत से लोग नए साल का जश्न प्रियजनों की कंपनी में मनाते हैं, जिसमें आगामी वर्ष में भाग्य और सफलता लाने के लिए परंपराएं शामिल हैं। बहुत से कल्चर इस खुशी के दिन को अपने अनोखे तरीके से मनाते हैं। आमतौर पर नए साल के दिन के रीति-रिवाजों और परंपराओं में शैंपेन और विभिन्न खाद्य पदार्थों के साथ जश्न मनाना शामिल है। नए साल की नई खुशी और एक साफ स्लेट की एक तारीख को चित्रित किया गया है। कई नए साल का जश्न मनाने के लिए, यह पूर्व वर्ष से सीखने और उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव करने का अवसर है।

इतिहास : नए साल का त्योहार सबसे पुराने त्योहारों में से एक है, लेकिन समय के साथ उत्सव की सही तारीख और प्रकृति बदल गई है। यह हजारों साल पहले प्राचीन बाबुल में उत्पन्न हुआ था, वसंत के पहले दिन को ग्यारहवें दिन के त्योहार के रुप में मनाया जाता था। इस समय के दौरान, कई संस्कृतियों ने साल के **पहले** दिन को तय करने के लिए सूर्य और चंद्रमा चक्र का उपयोग किया। जब तक जूलियस सीजर ने जूलियन कैलेंडर लागू नहीं किया, तब तक कि पहली जनवरी उत्सव का आम दिन बन गया। उत्सव की सामग्री के रुप में अच्छी तरह से विविध है। जबकि शुरुआती समारोह प्रकृति में अधिक मूर्तिपूजक थे, पृथ्वी के चक्र का जश्न मनाते हुए, ईसाई परंपरा नए साल के दिन मसीह के खतना का पर्व मनाती है। रोमन कैथोलिक भी अक्सर मैरी की इज्ज़त की दावत के लिए सोलेमिटी ऑफ़ मैरी, मदर ऑफ़ गॉड को मनाते हैं। हालाँकि, बीसवीं शताब्दी में, अवकाश अपने स्वयं के उत्सव में बढ़ गया और धर्म के साथ आम जुड़ाव से अलग हो गया। यह धार्मिक उत्सव के बजाय राष्ट्रीयता, रिश्तों और आत्मनिरीक्षण से जुड़ी एक छुट्टी बन गई है, हालांकि बहुत से लोग अभी भी बहुत पुरानी परंपराओं का पालन नहीं करते हैं।

नए साल का दिन और परंपराएं :

चीन : चीन में एक महीने पहले से ही घरों की सफ़ाई और रंग-रोगन चालू हो जाता है। इस त्योहार में लाल रंग महत्वपूर्ण होता है और खिड़की दरवाज़े अक्सर इसी रंग से रंगे जाते हैं। काग़ज़ के बंदनवार और सजावट की जाती है। खाने में कुछ विशेष व्यंजन बनते हैं और पहनने में रंगों का ख़ास ध्यान रखा जाता है। लाल पहनना शुभ, और काला या सफ़ेद अशुभ समझा जाता है। साल की आखिरी रात के भोजन के बाद सारा परिवार एक साथ ताश या चौपड़ जैसा कोई खेल खेलते हुए या टीवी देखते हुए नए साल की प्रतीक्षा करता है। अगले दिन बच्चों और अविवाहितों को खुशियों के प्रतीक के रुप में रकम से भरा लाल लिफ़ाफ़ा दिया जाता है। रिश्तेदारों और पड़ोसियों के यहाँ जाकर बधाइयों का आदान-प्रदान किया जाता है। चीनी लोगों का ऐसा मानना है कि हर रसोई में एक देवता रहता है जो उस परिवार का सारे साल का लेखा-जोखा वर्ष के अंत में ईश्वर के पास पहुँचाता है और वापस उसी परिवार में लौट आता है। सो इस हफ्ते में उसे विदा करने और फिर से उसका स्वागत करने के लिए पूरे सप्ताह आतिशबाजी चलती है और स्वागत समारोह आयोजित किए जाते हैं। तेज़ आतिशबाजी के पीछे मक़सद बुरी आत्माओं को भगाना भी माना जाता है। यहाँ ड्रेगन दीर्घ आयु और सुख समृद्धि का प्रतीक है।

जापान : जापानी नव वर्ष पहले २० जनवरी से १९ फरवरी के बीच हुआ करता था। पर अब यह २९ दिसम्बर की रात से ३ जनवरी तक ३ दिन तक मनाया जाता है। इस पर्व को यहाँ याबुरी नाम से जाना जाता है। दीवाली की तरह घर की सफ़ाई इस त्योहार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। घर ही नहीं अपितु बौद्ध और शितो मंदिरों की भी बड़े आयोजन के साथ दिसंबर में ही सफ़ाई और सजावट आरंभ हो जाती है। सजावट में पाइन बांस और प्लम पेड़ों के विभिन्न हिस्सों का उपयोग किया जाता है और घर के बाहर रोशनी की जाती है। जापानियों का मानना है कि साफ़ घर में सुख और समृद्धि आती है। इस त्योहार का प्रमुख कार्यक्रम होता है साल की अंतिम रात को १२ बजे मंदिर की घंटियों का १०८ बार बजना। लोगों की सुविधा के लिए इसका सजीव प्रसारण रेडियो और टीवी पर भी किया जाता है। इन घंटियों की आवाज़ के साथ पूरा राष्ट्र एक साथ नव वर्ष की प्रार्थना करता है। लोग मंदिरों में जाते हैं और भगवान बुद्ध की पूजा करते हैं। ऐसा समझा जाता है कि इससे भगवान प्रसन्न होकर उनको साल भार सुख समृद्धि प्रदान करते हैं। अगले तीन दिन तक विशेष प्रकार का भोजन किया जाता है जिसमें **ओजोनी** नाम का सूप अवश्य होता है। यह सूप सोयाबीन और मछली के शोरबे से बनाया जाता है। कार्ड भेजना जापानियों में बहुत लोकप्रिय है। ये कार्ड जापानी डाक सेवा **नेनगाजो** से ख़रीदे जाते हैं और पहली जनवरी से पहले ही पोस्ट कर दिए जाते हैं। जापानी डाकसेवा इन्हें पहली जनवरी को बाँटने की विशेष व्यवस्था करती है। अनुमान है कि एक जापानी नव वर्ष के सैंकडों कार्ड तक भेजता है।

कोरिया : कोरिया में भी अनेक अन्य एशियाई देशों की तरह नया साल सौर वर्ष और चंद्र वर्ष के अनुसार दो बार मनाया जाता है। ज्यादातर लोग सौर वर्ष को ही नया साल मनाते हैं। इसे **सोल-नल** कहा जाता है और यह पूरे परिवार के इकट्ठा होने पर आपस में मिल कर मनोरंजन, प्रेम और हँसी-खुशी बाँटने का दिन होता है। इससे एक दिन पहले, फूस से बुनी हुई ख़ास तरह की छलनियाँ, जिन्हें **बुक जोरी** कहते हैं, दरवाज़ों पर टाँगी जाती हैं। ऐसा विश्वास है कि ये घर को बुरी नज़र से बचाती हैं। पाँच रंगों से सजे नए कपड़े पहने जाते हैं जिन्हें **सोल-बिम** कहा जाता है।

नए साल की सुबह-सुबह सब लोग परिवार के सबसे बड़े पुरुष सदस्य के घर एकत्र होते हैं। यहां **चा-राय** नामक परंपरा को निभाया जाता है। इस परंपरा में अपने पूर्वजों को याद किया जाता है और **टोक-कुक** के प्याले परोसे जाते हैं। यह एक प्रकार का पतला सूप होता है जिसमें चावल के महीन टुकड़े और बीफ के शोरबे का प्रयोग किया जाता है। इसे स्वास्थ्य वर्धक समझा जाता है। **टोक-कुक** का अर्थ है आयु लाभ। ऐसा मानना है कि एक कटोरा सूप से जीवन में एक साल आयु बढ़ जाती है। इस प्रकार सभी अपनी उम्र इस दिन एक साल बढ़ा देते हैं। सुबह के भारी भरकम नाश्ते के बाद छोटे लोग बड़ों के सामने झुककर आशीर्वाद लेते है। इसको **से-बे** या **जोल** कहा जाता है। जोल के लिए अपने दोनों हाथों को आँखों के सामने रखना होता है। घुटने ज़मीन को छू जाएँ इस तरह बैठना होता है और हाथों के साथ-साथ सिर को भी झुका कर ज़मीन से छुआ देना होता है। छोटे बच्चे यह क्रिया आसानी से कर सकते हैं। बड़ी उम्र के लोग दूसरों की सहायता ले लेते हैं। बच्चे छोटे-छोटे सजावटी बटुए बनाते हैं जिन्हें **बुक जु मो नी** कहा जाता है। जोल के बाद सब बड़े लोग छोटों को पैसे देते हैं। बच्चे अपने पैसे नए बनाए गए बुक जु मो नी में रखते हैं।

जोल के बाद लड़के घर से बाहर आकर पतंग उड़ाते हैं और लट्टू नचाते हैं। लड़कियाँ सी-सॉ पर खेलती हैं। घर के भीतर **युत नो री** खेला जाता है। इसमें चार सीकों और चौखानों का प्रयोग होता है। जब तक परिवार साथ रहता है दादा से लेकर पोती तक सब लोग दिन भर खेल मनोरंजन और खाने पीने का आनंद उठाते हैं।

थाइलैंड : थाइलैंड में नए साल के त्यौहार को **सोन्गक्रान** कहते हैं। उनका नए साल का यह त्योहार १३ से १५ अप्रैल, ३ दिन चलता है। रीति के अनुसार सब लोग एक दूसरे पर पानी का छिड़काव करते हैं। बाल्टियाँ भर-भर कर किसी पर भी निशाना साधा जाता है। शायद अप्रैल महीने की गरमी में पानी का यह छिड़काव गरमी से भी राहत दिलाता है। पूरे देश में इस त्यौहार की धूम होती है। बैंकाक जैसे बड़े शहरों में लोग ३-४ दिन के लिए घूमने जाना पसंद करते हैं। इस दिन बड़ों के पाँव छू कर ग़लतियों के लिए माफ़ी माँगी जाती है और उनके हाथों पर पानी डाला जाता है। ऐसा समझा जाता है कि इससे आने वाले साल में अच्छी वर्षा होती है। गौतम बुद्ध की मूर्तियों का स्नान करवाया जाता है और प्रार्थना के साथ-साथ चावल, फल, मिठाइयाँ आदि का दान किया जाता है। दूसरे रिवाज के अनुसार भाग्य सँवारने के उद्देश्य से पिंजरे में बंद पंछी या घर में रखे मछलीपॉट से मछलियों की रिहाई की जाती है। **साबा** नामक खेल भी इन दिनों खेला जाता है। लोग नदी किनारे लोग मौज मस्ती करने आते हैं। छोटे बच्चे रेत में किले बनाकर उनमें झंडा लगाते हैं।

म्यांमार : म्यांमार में, जो भारत का पड़ोसी देश है, नव वर्ष के उत्सव को **तिजान** कहते हैं जो तीन दिन चलता है। यह पर्व अप्रैल के मध्य में मनाया जाता है। भारत में होली की तरह इस दिन एक दूसरे को पानी से भिगो देने की परंपरा इस पर्व का प्रमुख अंग है। अंतर इतना है कि इस पानी में रंग की जगह इत्र पड़ा होता है। प्लास्टिक की पिचकारियों में पानी भर कर लोग बिना छत की गाड़ियों में सवार एक दूसरे पर खुशबूदार पानी की बौछारें करते चलते हैं। त्योहार की तैयारी एक हफ़्ते पहले से शुरु हो जाती है। घरों की सफ़ाई और सजावट तो होती ही है, सड़कों पर शामयाने लगाकर खुशी मनाई जाती है। मित्रों व परिचितों को बुलाया जाता हे और मिठाइयाँ खिलाकर नव वर्ष के पर्व का मज़ा उठाया जाता है। विभिन्न प्रकार के नृत्य और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है और यह कार्यक्रम हफ्ते भर तक चलते ही रहते हैं। भगवान बुद्ध की पूजा का इस पर्व का विशेष अंग है।

दक्षिण अमेरिका : दक्षिण अमेरिका व कोलंबिया, में नए वर्ष का स्वागत अनोखे ढंग से किया जाता है। अनो न्यूइवो याने बीता साल, का पुतला घर के सभी सदस्यों के कपड़े मिलाकर बनाया जाता है। इसे अख़बार और काग़जों से भरा जाता है रंग बिरंगी कागज़ और तरह-तरह के पटाखों से सजाया जाता है। एक कागज़ पर अपने नापसंद काम या दुर्भाग्य, बुराइयों के बारे में लिख कर इस पर चिपकाया जाता है ताकि इस पुतले के साथ उनका भी नाश हो जाए। ठीक रात के बारह बजे अनो न्यूइवो को जलाया जाता है। और वह राख में तब्दील होने लगता है तो लोग खुशी मनाते हैं यह सोच कर कि सभी बुराइयाँ, दुर्भाग्य, पुरानी गल़तियों का नाश हुआ है। घर में इसे जलाना है तो यह बहुत ही छोटे आकार का बनाया जाता है और घर के सदस्यों के कपड़ों की जगह सिर्फ़ काग़ज़ ही इस्तेमाल किया जाता है।

भारत : भारत के विभिन्न हिस्सों में नव वर्ष अलग-अलग तिथियों को मनाया जाता है। सबसे ज्यादा बोली-भाषा वाले भारत के लोग अपनी-अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों के अनुरुप नव वर्ष मनाते हैं। किंतु २० सदी से भारतियों पर आधुनिकता का रंग ऐसा चढ़ा कि वे भी अब ३१ दिसम्बर की रात्रि १२ बजे नव वर्ष मनाने लगे हैं।

अफ़ग़ानिस्तान : अफ़ग़ानिस्तान में नव वर्ष पहली जनवरी को न मानकर **अमल** की पहली तारीख अर्थात गेगरी कैलेंडर की २१ मार्च को मनाया जाता है। २० मार्च नई दुनिया का प्रमुख दिन होता है। उस रात हरी सब्ज़ियों के साथ-साथ कढ़ी-चावल भी बनते हैं। लोग नए कपड़े पहनते हैं। १२ बजे बत्तियाँ बुझा दी जाती हैं तथा रिकॉर्ड की धुन पर लोग नृत्य करते हैं। १२ बजे का ऐलान होते ही लोग एक-दूसरे को नव वर्ष की शुभकामनाएँ देना शुरु कर देते हैं। यह कार्यक्रम अधिकतर खुले आकाश के नीचे होता है। यहाँ के सात फलों को मिलाकर एक पेय **मेवाना नोबराज** अर्थात **नव वर्ष का मेवा** बनाया जाता है। दिन के समय सब मिलकर विशेष प्रकार का भोजन करते हैं। फिर दो-तीन बजे के लगभग घर से बाहर कहीं जाना तथा घास पर चलना ज़रुरी होता है। इसे **सबजाला-हा-गाटकरदान** कहते हैं।

स्पेन : स्पेन में इस दिन रात्रि के १२ बजे के बाद एक दर्जन ताज़े अंगूर खाने की परंपरा है। इनकी मान्यता है कि ऐसा करने से वे साल भर स्वस्थ रहते हैं। नव वर्ष ३१ दिसंबर की रात को मनाया जाता है। सब लोग अपने-अपने अंगूरों के साथ बारह बजने की प्रतीक्षा करते हैं। जैसे ही बारह बजते हैं, घड़ी के घंटों के साथ इस विशेष प्रथा का पालन होता है। नियम यह है कि हर घंटे के साथ एक अंगूर मुँह में रखा जाना चाहिए और बारह घंटे पूरे होते ही बारह अंगूर ख़त्म हो जाने चाहिए। हालाँकि ऐसा होता नहीं है। सबके मुँह अंगूरों से भरे होते हैं और वे एक दूसरे को देख कर हँसने लगते हैं। कहते हैं कि प्राचीन काल में एक बार अंगूरों की बहुत अच्छी फसल हुई। इससे प्रसन्न होकर राजा ने देश के हर नागरिक को साल के अंतिम दिन बारह अंगूर भेंट किए। तभी से इस प्रथा का प्रारंभ हुआ।

रुस : रुस में नव वर्ष मनाने की परंपरा तीन सौ साल पहले प्रारंभ हुई जब वहाँ पीटर प्रथम ने नए साल का पौधा लगाया था और ऐलान किया कि हर साल पहली जनवरी को नए साल का त्यौहार मनाया जाएगा। आजकल वहाँ नए साल की खूब धूम होती है। रुसी सेंटा क्लाज़, जिसे फादर क्रॉस्ट कहते हैं, सड़कों पर अपनी सजधज और परेड से बच्चों को लुभाते हैं। लोग इस दिन का साल भर बड़ी बेसब्री से इंतज़ार करते हैं। छोटे बच्चों को तोहफ़े का इंतज़ार रहता है तो बड़े यह सोचते हैं कि आने वाला साल उनके लिए खुशियाँ और समृद्धि भरा होगा।

१३-१४ जनवरी की रात में नया साल दुबारा मनाया जाता है। इसे **पुराना नया साल** कहा जाता है। बाकी दुनिया में ज्यूलियन कैलेंडर इस्तेमाल किया जाता है जबकि रुस में जॉर्जियन। दोनों कैलेंडरों में १३ दिन का फर्क होता है। नए साल का स्वागत कुछ लोग अपने घरों में, कुछ रेस्तरां में तो कुछ देवदार वृक्ष के समीप करते हैं। एक दूसरे को नए साल की बधाई देना यहाँ बहुत ही शुभ माना जाता है। घरों को साफ़ सुथरा कर सजाया जाता है। देवदार वृक्ष घर में लाकर उसे गुब्बारे, रंगीन फ़ीते और कई सजावटी चीज़ों से सजाया जाता है। रंगबिरंगे बल्बों से इसे रोशन किया जाता है। इस पौधे के नीचे बुजुर्गों के दिए हुए खिलौने रखे जाते हैं। शाम को बच्चे इस पौधे के ईद-गिर्द घूमकर गाना गाते हैं, नाचते हैं। जवान बच्चे एक दूसरे के घर जा कर नए साल की खुशी बाँटते हैं। उनका फल, मिठाई, काजू, बदाम से मुँह मीठा किया जाता है और छोटे सिक्के दिए जाते हैं। बीते साल के बीतने पर और नए साल के आगमन पर बड़ी-बड़ी दावतें की जाती हैं। शैंपेन जैसे मद्य को बहुत महत्व दिया जाता है। मिल बैठकर शैंपेन पी जाती है। आतिशबाजियाँ भी खूब की जाती है। यदि इन दिनों बर्फ़ रही तो बिछी बर्फ़ पर स्केटिंग या हॉकी जैसे खेल खेले जाते हैं।

इस्लामी देशो में : इस्लामिक कैलेंडर का नया साल मुहर्रम होता है।

साभार : विकिपेडिया

शासकीय मेडिकल कॉलेज में विद्यार्थी कैसे करें पढ़ाई

प्राध्यापकों व सहायक प्राध्यापको अनेकों पद रिक्त मेडिकल शिक्षा प्रशासन की अनदेखी

बुलंद गोंदिया – शासकीय मेडीकल कॉलेज का नाम लेते ही विभिन्न समस्याएं सामने दिखाई देती है। चाहें वेतन की समस्या हो या अतिरिक्त सेवा की अब यह जानकारी सामने आई है कि गोंदिया मेडिकल कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करने वाले एमबीबीएस विद्यार्थीयों को पढानेवाले प्राध्यापकों के कई पद रिक्त पडे हुए है। जिस कारण विद्यार्थीयों के शिक्षा पर असर पड रहा है। बावजूद मेडीकल प्रशासन इस ओर अनदेखी कर रहा है।

गौरतलब है कि डॉक्टरों को धरती के भगवान कहा जाता है। यदि डॉक्टरों को ही पूरी शिक्षा नहीं मिली तो कैसे मरीजों को सेवा देंगे। इस संदर्भ में जानकारी के अनुसार गोंदिया मेडीकल कॉलेज में ६०० से अधिक विद्यार्थी एमबीबीएस की पढाई कर रहे है। उन्हें पढाने तथा मरीजों की सेवा करने के लिए शासन ने प्राध्यापकों के २१ पदों को मंजूरी दी है। इसी प्रकार सहायक प्राध्यापकों के २२ पद मंजूर है। लेकिन कई महिनों से सहायक प्राध्यापकों के ५ व प्राध्यापकों के ९ पद रिक्त पडे हुए है। जिनमें से कुछ पद इतने महत्वपूर्ण है कि उनकी शिक्षा के बिना मेडीकल चिकित्सा अधूरी होती है। रिक्त पद होने से कार्यरत प्राध्यापकों को अतिरिक्त सेवा देना पड रहा है। जिस कारण उन्हें शारीरिक, मानसिक परेशानियों का सामना करना पडता है। इतना ही नहीं तो एमबीबीएस के विद्यार्थीयों को पूरी तरह से शिक्षा नहीं मिल पा रही है। सबसे अधिक असर मरीजों की सेवा पर भी दिखाई दे रहा है। इस तरह की स्थिति शासकीय मेडीकल कॉलेज गोंदिया में कई महिनों से दिखाई दे रही है। बावजूद रिक्त पद नहीं भरे जा रहे है। जिसका खामियाजा एमबीबीएस के विद्यार्थी एवं मरीजों को उठाना पड रहा है।

पद भर्ती पर सवालिया निशान

गत माह में ही सहायक प्राध्यापक के पदों के लिए पद भर्ती निकाली गई थी। जिसमें जनऔषध वैद्कशास्त्र के दो पद, औषध वैद्कशास्त्र के तीन पद, क्षयरोग के एक पद, शल्य चिकित्सक शास्त्र का एक पद, स्त्रीरोग व प्रसुति शास्त्र के दो पद व क्षय-किरण शास्त्र का एक पद का समावेश था। संबंधित पदों के उम्मीदवारों ने आवेदन किया था। लेकिन कुछ पदों के उम्मीदवारों को विभिन्न कारण बताकर पदों के लिए अपात्र बता दिया गया है। जबकि बडे मुश्किल से डॉक्टर सेवा देने के लिए मिलते है। पद भर्ती पर हमेशा सवाल उठाया जाता है। इस ओर भी संबंधित प्रशासन ने ध्यान देना आवश्यक है।

नहीं मिल रहे उम्मीदवार

संबंधित सहायक प्राध्यापकों के पदो के लिए भर्ती प्रक्रिया ली गई। यह पद संविदा पध्दति के है। लेकिन पद भर्ती में उम्मीदवार नहीं पहुंचे। सहायक प्राध्यापकों की पद भर्ती के अधिकार गोंदिया मेडीकल प्रशासन को है। लेकिन प्राध्यापकों के पद भर्ती के अधिकार वरिष्ठ अधिकारी कार्यालय को दिया गया है।

– डॉ.अपूर्व पावडे, अधिष्ठाता
शासकीय मेडीकल कॉलेज गोंदिया

विदर्भ राज्य के लिये सभी नेता मिलकर करें प्रयास - छैलबिहारी अग्रवाल

बुलंद गोंदिया – गोंदिया संहित अनेक जिलों में पंचायतों के चुनाव संपन्न हो चुके हैं, और इसके बाद नगर पालिका चुनाव संपन्न होंगे, लेकिन इसके पूर्व अब सबसे पहले विदर्भ राज्य के अधिकारों और उन्नति का फैसला किया जाना चाहिये, यह मांग गोंदिया के विदर्भवादी नेता छैलबिहारी अग्रवाल ने की है, तथा श्री अग्रवाल ने विदर्भ राज्य के विकास के लिये विदर्भ का प्रतिनिधित्व करने वाले सभी दलों के नेताओं को एक स्वर में विदर्भ राज्य बनाये जाने की मांग का समर्थन करना चाहिये, और विदर्भ राज्य बनाये जाने का प्रस्ताव विदर्भ के नेताओं को सदन में लाना चाहिये, यह आहवान विदर्भ के सभी नेताओं से किया है।

श्री अग्रवाल ने कहा कि विदर्भ राज्य बनाने का वादा पिछले चुनाव में घोषणापत्र में भाजपा ने किया था, इसलिये जब सदन में विदर्भ का प्रस्ताव आयेगा, तो भाजपा के विधायक और भाजपा की सरकार वैसे भी विदर्भ का विरोध नहीं कर सकेंगे, जबकि कांग्रेस नेता प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष और साकोली क्षेत्र के विधायक नाना पटोले जबकि पूर्व में विदर्भ राज्य बनाये जाने की मांग लोकसभा में सदन में रख चुके थे, वहीं स्वयं राष्ट्रवादी कांग्रेस नेता शरद पवार भी साफ कर चुके हैं कि विदर्भ के नेता और विदर्भ की जनता चाहेगी तो विदर्भ राज्य बनाने की दिशा में प्रयास किया जायेगा, तो फिर ऐसी स्थिति में अब देर नहीं की जानी चाहिये, और सबसे पहले विदर्भ की बात सदन में करते हुए विदर्भ राज्य का प्रस्ताव केन्द्र सरकार के पास भेजने के लिये पहल करना चाहिये, यह सुझाव भी छैलबिहारी अग्रवाल ने सभी नेताओं को दिया है।

गिनाये विदर्भ राज्य बनने के फायदे..

छैलबिहारी अग्रवाल ने कहा कि अभी महाराष्ट्र सरकार में विदर्भ से प्राप्त राजस्व की राशी को मराठवाड़ा के नेता उड़ा ले जाते हैं, इसी के साथ मंत्रीमंडल में विदर्भ के मंत्रीयों की संख्या कम होती है, विदर्भ के मामलो में फैसले समय पर नहीं हो पाते, आम जनता के लिये हर काम के लिये मुंबई जाना कठिन हो जाता है, समय और धन की की बर्बादी होती है, जबकि छोटे राज्यों के विकास की गति क्या होती है यह उन राज्यों में जाकर देखा जा सकता है जिनको स्वतंत्र राज्य बनाया गया है। छैलबिहारी अग्रवाल ने कहा कि एक तरफ विदर्भ का विकास होगा, तो विदर्भ के नेताओं का भी विकास होगा, अभी ८ लोगों को मंत्रीमंडल में स्थान मिलता है, फिर २० लोगों को मंत्री मंडल में मौका मिलेगा, इससे अनेक लाभ विदर्भ के विधायकों को होंगे, इसी के साथ केन्द्र से विदर्भ का हिस्सा सीधे विदर्भ को मिलेगा, और विदर्भ की विकास की रफ्तार अन्य राज्यों से कहीं अधिक तीव्र हो सकेगी।

विदर्भ बनाने से महाविकास आघाड़ी सरकार को अगली बार जनता जरुर मौका देगी छैलबिहारी अग्रवाल ने कहा कि चूंकि प्रदेश में सरकार महाविकास आघाड़ी की है, इसलिये विदर्भ बनाने का फैसला भी राज्य सरकार ही कर सकती है, और सदन में विदर्भ के लिये प्रस्ताव लाकर इसे पारित कर सकती है, यदि महाविकास आघाड़ी सरकार ने विदर्भ के लिये प्रस्ताव लाया तो यह महाविकास आघाड़ी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जायेगी, जिसके दम पर विदर्भ में पुन: महाविकास आघाड़ी सरकार को चुनावी लाभ भी मिल सकेगा।

मार्शल आर्ट चैंपियनशिप मे गोंदिया के खिलाडी सफल

बुलंद गोंदिया – तीसरी राष्ट्रीय कोशिकी मार्शल आर्ट टूर्नामेंट २४ से २६ दिसम्बर २०२१ को ताजबाग, नागपुर मे आयोजित की गई थी जिसमे गोंदिया जिले से १० खिलाड़ियों ने महाराष्ट्र टीम की तरफ से प्रतिनिधित्व किया व तमिलनाडु, हरियाणा,देहली मध्यप्रदेश, से आये हुए खिलाड़ियों के साथ खेलकर गोल्ड मेडल याशिका परमार, मधुश्री राव, एकवीरा कोसरे, सिल्वर मेडल कल्याणी राव,पाखी काड़े,धनश्री श्रीरामे,वंशिका मेश्राम,ब्रोज मेडल तन्वी पटेल, आर्ची तिड़के, शौर्य सनप्ला ने अपने अपने आयु व वजन गट मे मेडल जीत कर गोंदिया शहर व जिले का नाम रोशन कीया इन सभी को महाराष्ट्र कोशिकी अध्यक्ष शेख जावेद सर, महासचिव किरण यादव सर ने मेडल देकर सम्मानित किया ये सभी खिलाडी गोंदिया जिला क्रीड़ा संकुल मे गोंदिया जिला क्रीड़ा अधिकारी कार्यालय व गोंदिया जिला कराते एसोसिएशन के सयुक्त तत्वधान मे प्रेक्टिस करते हैँ स

इन सभी कराते खिलाड़ियों ने अपनी इस सफलता का श्रेय कराते जिलाध्यक्ष विशालसिंग ठाकुर, प्रमुख कोच रविना बरेले, जिला क्रीड़ा अधिकारी घनश्याम राठौड़ , राज्य क्रीड़ा मार्गदर्शक नाजुक उइके सर को दिया। इनकी इस उलब्धि पर नीलेश फुलबांधे, मानकर सर, मुजीब बेग, अंकुश गजभिये, कृतुराज यादव, विनेश फुंडे, निखिल बरबटे व सभी अकादमी के सदस्यों तथा पालकगण ने अभीनंदन किया।

अवैध रुप से संग्रहित रेत जप्त राजस्व विभाग की कार्रवाई

बुलंद गोंदिया – गोंदिया जिले में बड़े पैमाने पर गौण खनिज का अवैध उत्खनन कर राजस्व को नुकसान पहुंचाया जा रहा है। जिस पर लगाम लगाने के लिए जिला राजस्व विभाग द्वारा विशेष पथक तैयार कर कार्यवाही की जा रही है। इसी प्रकार एक मामले में अवैध रुप से संग्रहित कर ३० ब्रास रेत गोंदिया तहसील कार्यालय के विशेष पथक द्वारा जप्त किया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार विशेष पथक को जानकारी प्राप्त हुई की ढापेवाडा महलगांव परिसर में गट क्रमांक २८ क्षेत्रफल १-४२ हेक्टेयर भूमि मालिक पतिराम नागपुरे के खेत परिसर में अवैध रुप से रेत का संग्रहण किया गया है जिस पर तहसीलदार आदेश डफर के मार्गदर्शन में कार्रवाई कर ३० ब्रास रेत जप्त की गई । उपरोक्त कार्रवाई ए.आर. नंदेश्वर पटवारी महलगांव, डब्ल्यू.बी. आगाशे पुलिस पाटिल महलगांव द्वारा करते हुए मामला दर्ज कर जांच शुरु की है।

महिला शक्ति को सुपर वुमन अवार्ड से किया सम्मानित

बुलंद गोंदिया – महिलाएं कुछ भी कर सकती हैं अगर इसे दिल से लिया जाए. अपने सामने आने वाली कठिनाइयों को पार कर वे अपने कौशल के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान कर रही हैं.ऐसी महिला शक्तियो को युवा कुणबी संघटना गोदिंया ,युवा पर्व सुपर वूमन व सिद्धिविनायक एज्युकेशन इन्स्टिटयूट ने सुपर वुमन अवार्ड २०२१ से सम्मानित किया। देश में १४ राज्यों और ११,००० किलोमीटर का सफर तय कर इतिहास रचने वाले सांसद सुनील मेंढे की पत्नी शुभांगी सुनील मेंढे और उनके साथ यात्रा पूरी करने वाली डॉ. प्रीति छोले के साथ शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. इंदिरा सपटे ,कृषी क्षेत्र सुनीता धनराज भाजीपाले सामाजिक क्षेत्र में डॉ सविता बेदारकर, स्वास्थ्य क्षेत्र में डॉ प्रज्ञा सोनारे, ,व्यावसायिक क्षेत्रमें श्रीमती वर्षा भंडारकर, क्रीडा क्षेत्र श्रीमती माया राघोर्टे,सामाजिक कार्य शारदा ब्राम्हणकर और श्रीमती मंजूषा फुंडे को समाज के लिए उनके विशेष कार्य के लिए सुपर वुमन अवार्ड २०२१ से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन कल्पना विजय बाहेकर ने किया, अध्यक्षता मीनाक्षीताई शैलेश अहिरकर ने मुख्य अतिथि के रुप में डॉ. कृचा ढोने, नंदा राउत, शारदा ब्राम्हणकर, जिला सयोंजिका रिताताई बागड़े उपस्थित थीं। इस अवसर पर महिलांओ ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, समाज जनजागृति पथनाट्य,लोकगीत, लोक नृत्य प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर गजेंद्र फुंडे, दुलीचंद बुद्ध, लीलाधर पाथोड़े, लक्ष्मणराव गुडधे, सुधीर बागड़े, दिनेश बाहेकर, नितिन फुंडे, सुशांत कुठे, प्रदीप चमत, शैलेश अहिरकर, अनिल सेलुकर और चुन्नीलाल ठाकरे मौजूद थे। मंजुषा फुंडे, प्राची गुधे, प्रभा बुद्ध, अर्चना थवारे, मंडा गैधाने, स्नेहल तारोन, नम्रता फुंडे, योगिता थावरे, वैशाली ब्राम्हणकर, वर्षा कुंभरे, हर्ष मेंडे, मीनाक्षी पाथोड़े, मोहिनी डोनोड, शांता मेंढे, मोनिका, शिल्पा मटाले, भारती कुतरे पूजा राउत, निशा रखड़े, माया बहेकर आदि ने अथक परिश्रम किया। कार्यक्रम का संचालन स्मिता कुठे, चारुशीला भंडारकर एवं ज्योत्सना कोरे ने शानदार ढंग से किया।

कोरोनावायरस का खतरा नहीं है टला नियमों का करें पालन -जिलाधिकारी गुंडे

ओमीक्रॉन वायरस से बड़ी चिंता, कोविड-१९ नियमों का पालन बंधनकारक, लापरवाही ना करें, मास्क का करें उपयोग

बुलंद गोंदिया - कोरोना संक्रमण खत्म हो चुका है ऐसा समझते हुए नागरिकों द्वारा नियमों का पालन नहीं किया जा रहा ऐसा जिले में दिखाई दे रहा है। किंतु अब कोरोनावायरस का नया विषाणु ओमीक्रॉन का संक्रमण पूरे विश्व में बढ़ना शुरु हो गया है ,जिसमें नागरिक लापरवाही मैं ना रहते हुए कोविड-१९ प्रोटोकाल के नियमों का पालन करना होगा तथा तीसरे चरण की पार्श्वभूमी पर अधिक सावधानी रखते हुए जिम्मेदारी से नियमों का पालन करने की आवश्यकता है ऐसा आवाहन जिलाधिकारी नयना गुंडे द्वारा किया गया है ।

आगे उन्होंने कहा कि कोरोना संक्रमण खत्म हो चुका है ऐसा समझते हुए कुछ नागरिक सामाजिक अंतर का पालन नहीं कर रहे हैं तथा सार्वजनिक स्थानों पर मास्क का भी उपयोग नहीं हो रहा है यह बिल्कुल गलत है। इसके लिए नागरिकों द्वारा मास्क का उपयोग करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। विवाह समारोह, भीड़भाड़ वाले स्थान ,बाजार परिसर वाले स्थानों पर नागरिकों द्वारा नियमों का पालन ना कर घूमते हुए दिखाई देते हैं यह गंभीर विषय है। इस पर जल्द ही नियमों का पालन न करने वालों पर कार्रवाई शुरु की जाएंगी इसकी चेतावनी दी।

जिले में कोरोना संक्रमित मरीजों की कमी होना कोरोना संक्रमण खत्म हो चुका यह समझना भारी भूल होंगी क्योंकि खतरा अभी टला नहीं है सतर्कता व सावधानी बरतना आवश्यक है तथा नागरिकों का लापरवाह होना स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक नहीं है ऐसा जिला अधिकारी द्वारा कहा गया तथा कोरोना पर मात करना टीकाकरण ही एकमात्र उपाय है। जिन्होंने अब तक एक भी डोज नहीं लिया है उन्हें तत्काल टीका लेना आवश्यक है तथा जिनका दूसरे दोस्त का समय हो चुका है वह तत्काल अपना दूसरा डोज लगवाए जिले में टीकाकरण में ९० प्रतिशत नागरिकों द्वारा पहला डोज लिया जा चुका है तथा दूसरे डोज का प्रमाण ६३ प्रतिशत ही है। इस संदर्भ में नागरिकों द्वारा किसी प्रकार की लापरवाही ना की जाए वर्तमान में जिले में कोरोना मरीजों की संख्या अत्यंत कम है ,किंतु जिले के आसपास के तथा जिले में भी कुछ पॉजिटिव मरीज सामने आए हैं इसे ध्यान देना होगा तथा आगामी कुछ दिनों तक कोविड-१९ नियमो का पारण करना होगा ऐसी जानकारी उन्होंने दी तथा ओमीक्रॉन के नए विषाणु की पार्श्वभूमी पर अधिक ध्यान देना वह सतर्कता बरतना आवश्यक है।

स्वर्गीय सुंदरलाल यादव पहलवान की स्मृति में

जनसेवा शिविर का आयोजन

बुलंद गोंदिया – गोंदिया शहर के मशहूर पहलवान स्वर्गीय सुंदरलाल यादव की स्मृति में जनसेवा शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें शासन की विभिन्न योजनाओं को परिसर के नागरिकों तक पहुंचाने का कार्य किया गया जिसमें सैकड़ों लाभार्थियों को लाभ मिला। उल्लेखनीय है कि सुंदरलाल यादव पहलवान पहलवानी के क्षेत्र में मशहूर तो थे ही साथ ही वे गोंदिया नगर परिषद के पार्षद व सामाजिक क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया था उनकी स्मृति में आयोजित शिविर में राशन कार्ड, संजय गांधी निराधार योजना, श्रवणबाड़ योजना, राष्ट्रीय कुटुंब अर्थसहाय तथा कोविड-१९ प्रमाण पत्र का शिविर आयोजित किया गया था। जिसमें कोविड-१९ वैक्सीन के २७९ प्रमाणपत्र, संजय गांधी निराधार योजना में २७ महिलाएं ,राशन कार्ड शिविर में १५८ ,श्रवनबाड़ योजना में १४ नागरिकों के फॉर्म भर कर जमा किया गया जिसका लाभ उन्हें प्राप्त होगा उपरोक्त शिविर में नागरिक आपूर्ति विभाग के अधिकारी नाईक, मेश्राम, सतीश गावडे, पारधी तथा संजय गांधी निराधार योजना से टापु शेख, बंटी गावंडे, कोविड-१९ में अंकित अरखेल ने विशेष सहयोग दिया।

उपरोक्त शिविर का आयोजन पार्षद पंकज यादव व पार्षद लोकेश यादव के विशेष सहयोग से महेश हसीजा, अनिल ककवानी, अक्की सचदेव, इमरान पठान, दिनेश जालू, राजेश पंजाबी, रमेश बाघवारे, मलिक शेख, लाला जायसवाल लकी केडिया डबली अरोड़ा सुंदरानी ने भी सहयोग दिया।

RTI क्या है?

आइये जानते हैं **आरटीआय** का फुल फॉर्म क्या है, आरटीआय Act को RIGHT TO INFORMATION ACT कहते हैं। हिंदी में सूचना का अधिकार अधिनियम २००५ कहते हैं। ये आरटीआय एक्ट भारत के सभी नागरिकों पर लागू है। सूचना का अधिकार अधिनियम २००५ में ६ अध्याय तथा कुल ३१ धाराएं हैं।

आम बोलचाल की भाषा में कहा जाये तो सूचना का अधिकार (Right to Information) अधिनियम, २००५ भारत सरकार का एक अधिनियम है, जिसे नागरिकों को सूचना का अधिकार उपलब्ध कराने के लिये लागू किया गया है। आरटीआई या सूचना का अधिकार को संविधान के अनुच्छेद १९ (१) के तहत एक मौलिक अधिकार के रुप में दर्जा दिया गया है। अनुच्छेद १९ (१) के अंतर्गत जैसे हर नागरिक को बोलने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है उसी तरह यह भी जानने का हक़ है की सरकार कैसे काम करती है और उसकी क्या भूमिका है।

सूचना का क्या अर्थ है

सूचना का अर्थ है विभिन्न रिकॉर्ड, दस्तावेज, ज्ञापन, ई-मेल, विचार, सलाह, प्रेस विज्ञप्तियाँ, परिपत्र, आदेश, लॉग पुस्तिका, ठेके सहित कोई भी उपलब्ध सामग्री (नमूना) से है, जिसे निजी निकायों से सम्बन्धित तथा किसी लोक प्राधिकरण द्वारा उस समय के प्रचलित कानून के अन्तर्गत प्राप्त किया जा सकता है।

आरटीआई अधिनियम का उद्देश्य

आरटीआई अधिनियम का उद्देश्य बहुत विस्तृत और व्यापक है जिसमे कुछ बाते महत्वपूर्ण है वो इस प्रकार है, आरटीआई अधिनियम को लाने का उद्देश्य सरकारी सिस्टम में पारदर्शिता लाना, जवाबदेही तय करना, नागरिकों को सशक्त बनाना, भ्रष्टाचार पर रोक लगाना और लोकतंत्र की प्रक्रिया में नागरिकों की भागीदारी सुनिश्चित करना है। आरटीआय के अंतर्गत आने वाले विभाग जहाँ से सूचना मांगी जा सकती है। इस अधिकार का प्रयोग आप सभी गवर्मेंट डिपार्टमेंट, प्रधानमंत्री कार्यालय, मुख्यमत्री कार्यालय, बिजली कंपनियां, बैंक, स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल, राष्ट्रपति कार्यालय, पुलिस, बिजली कंपनियां, इत्यादि में कर सकते है।

आरटीआय आवेदन शुल्क : सूचना के अधिकार (आरटीआय) के लिए १० रुपये का शुल्क निर्धारित किया गया है द्य गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों के लिए यह निशुल्क है।

आवश्यकता है

गौशाला में गौ-सेवा के कार्य करने हेतु अनुभवी व्यक्ति की आवश्यकता है। रहने व खाने की व्यवस्था के साथ ही योग्यतानुसार वेतन दिया जायेगा। इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें...
बुलंद गोंदिया कार्यालय
जगन्नाथ मंदिर के पास, गौशाला वार्ड, गोंदिया
मो. : 9405244668, 7670079009
समय : दोपहर 12 से संध्या 5 बजे तक

धोखाधड़ी मामले में संत नरहरी पत संस्था पर शुरु हुई कार्रवाई

१३ संचालकों के खिलाफ ५८ लाख की धोखाधड़ी का पहला अपराध दर्ज : रिऑडीटर जोशी की भूमिका संदिग्ध

बुलंद गोंदिया – जिले में छोटे बड़े गरीब तबके के लोगों से डेली डिपाजीट के नाम पर राशि जमा करने का कार्य करते हुए अनेक पत संस्थाएं संचालित है। जिनमें से कुछ पत संस्थाओं ने लोगों की रात-दिन मेहनत मजदूरी कर जमा की गई राशि गबन कर ली। ऐसी ही संस्थाओं में गोंदिया में विगत अनेक दिनों से जागृति पत संस्था और गोंदिया नागरी पत संस्था के गबन के कारनामे चर्चा में है। जागृति पत संस्था के संचालक पिछले कई महीनों से जेल यात्रा पर है। इसी दरम्यान गोंदिया में एक और पत संस्था संत नरहरी पत संस्था के गबन का भांडाफोड़ डेली डिपॉजीटरों ने किया। निवेशकों और एजेंटों द्वारा पिछले एक वर्ष से बंद पड़ी पत संस्था के कार्यालय और संचालकों के चक्कर काट-काटकर अपनी रकम वापसी के लिये दबाव बनाये जाने के बाद तथा एजेंट कायरकर संहित अनेक लोगों द्वारा फांसी लगाकर आत्महत्या की धमकी दिये जाने के बाद आखिरकार एक साल से चल रही टालमटोल के बाद संत नरहरी पत संस्था के १३ संचालकों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में रामनगर पुलिस थाने में २३ दिसंबर को पहला मामला लेखा परीक्षक जोशी की शिकायत पर ४.५ करोड़ की धोखाधड़ी और गबन की शिकायतों के प्रकरण में पहली कार्यवाही के रुप में ५७ लाख ९१ हजार १० रुपये की धोखाधड़ी करने का मामला दर्ज किया है।

एफआईआर में लेखा परीक्षक ने किया यह उल्लेख

गौरतलब है कि लेखा परीक्षक अनिरुद्ध जोशी ने अपनी ओर से की गई एफआईआर में यह उल्लेख किया कि सन २०१५ से फरवरी २०१८ तक सभी संचालकों की हर महीने मासिक सभा हुई। उसके बाद संचालकों की किसी भी प्रकार की कोई सभा नहीं ली गई। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष व सचिव की ओर से संस्था का कामकाज से संबंधीत सभी निर्णय लिये जाते रहे। ऐसे सभी निर्णयों के लिये समिती के सभी सदस्य संयुक्तता से व प्राथमिकता से जिम्मेदार होते है, यह सभी सदस्यों को पता होता है। तत्कालीन कार्यरत संचालक, व्यवस्थापक ने अध्यक्ष, उपाध्यक्ष द्वारा लिये गये निर्णयों के बारे में कोई भी शिकायत न करते हुए संस्था ने लोगों के रुपयों की अनेक प्रकार की जमा की झुठी एन्ट्री कर उसे सत्य दिखाकर सभी ने मिलकर रुपयों का उपयोग किया, ऐसा लेखा परीक्षण में जांच में सामने आया है। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, संचालक मंडल व व्यवस्थापक ने सभा में बडी मात्रा में खुद के फायदे के लिये नियम के बाहर जाकर फर्जी लेने-देन एवं कर्ज देने के साथ ही फर्जी बैलेंसशीट में देय रकम दिखाकर, झुठा अभिलेख तैयार कर संस्था व सभी साधारण सभासद व जमाकर्ताओं की जमा राशि वापस देने के लिये टालमटोल कर फंसाया। तथा संस्था में २०१९ तक की जांच में दि. ०१-०४-२०१५ से ३१-०३-२०१९ तक के कार्यकाल में कुल ५७,९१,१०३ रु. के गबन को आरोपी व्यवस्थापक व संचालक मंडळ ने अंजाम दिया। जिसके विरोध में गिरफ्तारी करने संबंधी प्राथमिकी दर्ज करवाई।

इन धाराओं में हुआ १३ संचालकों और १ व्यवस्थापक पर मामला दर्ज

लेखा परीक्षक जोशी कर रिपोर्ट पर कुल १३ संचालकों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई है। जिसमें रामनगर पुलिस थाने में अपराध क्रमांक ४६९/२०२१ धारा ४२०, ४०९, ४६७, ४६८, ४७१, ३४ भादंवी सहधारा ३, ४ महाराष्ट्र जमाकर्ताओं के हित संबंध का संरक्षण अधिनियम १९९९ के तहत अपराध दर्ज किया गया है। मामले की जांच सहायक पुलिस निरीक्षक सोने पुलिस स्टेशन रामनगर कर रहे है।

२००९ से २०२१ तक संस्था के कौन से संचालक हैं गबन के दोषी

संत नरहरी पत संस्था के फर्जीवाड़े के संबंध में प्राप्त जानकारी के अनुसार नरहरी पत संस्था में २००९ में पतसंस्था पंजीकृत की गई। तब अध्यक्ष प्रविण प्रमोद ढोमने, समित कालीका, शंकर चक्रवर्ती, प्रकाश बाबुराव वडीचार, पंकज सुरेश वंजारी, विजय माणिकराव करंडे, नितेश दर्याव बिसेन, दिनेश नंदलाल टेकाम, बबनराव केशोराव रोकडे, संजय परसराम खांडेकर, पंकज विश्वनाथ मेश्राम, कु. अनिषा चंद्रकांत ढोमणे, कु.ज्योती रामभाऊ सोनवाने, श्रीमती वैशाली सदानंद रहांगडाले संस्था की संचालक सदस्य थे। जबकि वहीं फिर २०१८ में चुनाव किये गए और प्रवीण ढोमणे पुन: अध्यक्ष बनाए गए। जबकि संचालक सदस्यों में समित कालीका, शंकर चक्रवर्ती, पंकज वंजारी, नितेश बिसेन, बबनराव रोकडे, योगेश मेश्राम, अनिषा ढोमणे, अपर्णा करंडे, विजय करंडे, लेखराम चनाप, दर्शन देशभ्रतार का नाम संचालक सदस्य में शामिल है। इन संचालकों में पुराने और नए सदस्यों में कुल मिलाकर १६ संचालक सदस्य होते हैं, जिनमें से १३ के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।

डीडीआर काम्बले की भूमिका संदिग्ध

संत नरहरी पत संस्था के गबन की शिकायत पिछले एक वर्ष पूर्व सामने आई थी। इस मामले में लगातार शिकायतें निवेशकों ने पुलिस थाने से लेकर सहायक निबंधक कार्यालय तक पहुंचकर की। अनेक शिकायतों के बाद ऑडिट, फिर री-ऑडिट के नाम पर डीडीआर काम्बले ने निवेशकों को गुमराह किया, और कार्यवाही शुरु है, जांच शुरु है कहकर टालमटोल किया। जिससे कि पिछले एक वर्ष से कार्यवाही प्रतिक्षारत रहने के कारण नरहरी पत संस्था के संचालक बेखौफ घुमते-फिरते मौजमस्ती करते रहे। उन्हे गबन की गयी रकम को ठिकाने लगाने का पर्याप्त अवसर प्राप्त हो गया। जिसके चलते यह सामने आ रहा है कि गोंदिया में निरंतर इस तरह से पत संस्थाओं के गबन मामलों में डीडीआर द्वारा समय पर जांच एवं कार्यवाही को अंजाम नहीं दिया जाता, जिसके कारण पत संस्थाओं के गबन के मामले बढ़ रहे हैं। अनेक लोगों का यह कहना है कि डीडीआर काम्बले ने पत संस्थाओं से लाखों रुपये रिश्वत के जमा किये हैं, तथा गबन मामलों को प्रोत्साहन दिया है। जिसके चलते डीडीआर की संदिग्ध भूमिका भी जांच किये जाने योग्य है।

४.५ करोड़ के गबन की शिकायत फिर सिर्फ ५८ लाख की एफआईआर क्यों?

पिछले एक वर्ष से निवेशकों की चप्पलें घिस गई, एजेंट कायरकर द्वारा स्वयं को फांसी लगाने की शिकायत करनी पड़ी, अनेक समाचार पत्रों में संत नरहरी पत संस्था के घोटाले चर्चित रहे, बावजूद इसके जहां लम्बा समय लगा दिया गया। लेकिन अब कार्रवाई की भी गई तो इस कार्रवाई में जांच के बाद सिर्फ ५८ लाख रुपये के गबन की ही शिकायत की गई। वर्ष २००९ से २०२१ की जांच को एफआईआर में शामिल नहीं किया जाना भी अनेक सवालों के साथ ही डीडीआर, लेखा परीक्षक की संदिग्ध भूमिकाओं की ओर ईशारे करते हैं। गोंदिया जिले में इस तरह से पत संस्थाओं के एक पर एक सामने आते घोटालों में बमुश्किल की गई कार्र्वाई को निश्चित ही निवेशकों के लिये जोखिमपूर्ण और चिंतनीय माना जा सकता है। ऐसी परिस्थितियों में जबकि संत नरहरी पत संस्था के संचालकों ने बड़ा गबन किया है, तब इन संचालकों की गिरफ्तारी कब तक की जायेगी, और शेष घोटाले पर दूसरी एफआईआर कब तक रिऑडीटर जोशी करवा पाएंगे, देखने वाली बात होगी।

नए पुराने सभी संचालकों के खिलाफ हो एफआईआर

पत संस्था के एजेंट भास्कर रामभाऊ कायरकर ने मांग की है कि नरहरी पत संस्था के गबन मामले में लगभग २२०० लोगों के ४.५ करोड़ रुपये दबा लिये गए हैं। इसमें पुराने व नए सभी संचालकों की भूमिका और जिम्मेदारी बनती है। इसलिये नरहरी पत संस्था के ४.५ करोड़ के गबन को लेकर सभी संचालकों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर उनको गिरफ्तार कर उनकी और उनके परिवारजनों की संपत्ति नीलाम कर निवेशकों के भुगतान किये जाएं। कायरकर ने कहा कि सभी एजेंट और निवेशकों के साथ मिलकर वे इस मांग का ज्ञापन जिलाधिकारी तथा सांसद प्रफुल पटेल को देंगे।

सहीं उपचार से कठिन परिस्थितियों में भी बचाई जा सकती है कैंसर रोगी की जान - डॉ. चौधरी

बुलंद गोंदिया – गोदिया जिले में विद्यार्थी जीवन बिताने के बाद अनेक महानगरों में कैंसर सर्जन के रुप में सेवाएं दे रहे वोकार्ट हॉस्पिटल के डॉ. वैभव चौधरी का २५ दिसंबर को गोदिया आगमन हुआ। गोंदिया पहुंचने पर डॉ. चौधरी ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से कैंसर जागरुकता के संबंध में पत्रकारों से बात की।

चौधरी ने कैंसर को अब लाईलाज बिमारी मानने से इनकार करते हुए अनेक केसों में मिली सफलता के संबंध मे जानकारी दी। डॉ. चौधरी बताया कि कैंसर के मरीजों के लिये सबसे ज्यादा जरुरी है कि कैंसर के रोगों को उनके कैंसर की तीव्रता के अनुरुप उन्हें डॉक्टर्स की देखरेख में दवाईयों और रेडियेशन दिये जाने से मरीज को बचाने में सफलता प्राप्त हो सकती है। डॉ. चौधरों ने अपने अनुभवों के संबंध में जानकारी देने के साथ ही यह भी बताया कि आज के समय में कैंसर के लिये रेडियेशन की प्रणालों में भी काफी सुधार आया है और आज इस तरह की तकनीक भी इजाद करने में सफलता मिली है कि रेडियेशन से शरीर को जो कष्ट होता था और बाल झड़ जाते थे, अब वैसा नहीं होता।

सिगरेट, गुटखा, तंबाकू से बचे युवा पीढ़ी

कैंसर जागरुकता के संबंध में कैंसर विशेषज्ञ डॉ. वैभव चौधरी ने युवा पीढ़ी और सभी से अपील की। डॉ. चौधरी ने कहा कि भारत में लोगों को सर्वाधिक मुंह का कैंसर होता है। यह सिगरेट, गुटखा, तंबाकू के सेवन से होता है। डॉ. चौधरी ने यह भी बताया कि अब यह भी देखने मे आ रहा है की युवावस्था में भी नवजवान कैंसर रोग के शिकार हो रहे है। इसलीये युवा पीढी नशीले पदार्थों और तंबाखूजनित पदार्थ का सेवन ना करें। वहीं उन्होंने कैंसर के कारणों में यह बताया कि ताजा रिपोर्ट में अब यह भी देखने में आ रहा न्यूज पेपर में जो स्याही का उपयोग होता है वह मानव शरीर लिये खतरनाक है। इसलिये न्यूज पेपर का उपयोग सिर्फ पढ़ने तक ही किया जाना चाहिये।

घटिया निर्माण कार्य पर लगे लगाम, जनप्रतिनिधियों की चुप्पी पर सवालिया निशान

उच्चस्तरीय जांच की मांग

बुलंद आमगांव – उपविभागीय सार्वजनिक लोकनिर्माण विभाग के अधिकारियों के लापरवाही के चलते शिवालय कंस्ट्रक्शन कंपनी कर रही घटिया निर्माण कार्य, कोई लगाम ना होने के कारण अपनी मन मानी कर रही है, संबंधित विभाग विभाग के अधिकारियों वेक कार्यवाही ना किये जाने पर सवाल उठाये जा रहे हैं।

रेलवे स्टेशन से लांजी रोड़ तक लगभग ४.६० किलोमीटर मार्ग तक २१.८४ करोड़ रुपये का काम शिवालय कंस्ट्रक्शन कंपनी को शासन द्वारा दिया गया था, उपविभागीय अभियंता सुनील बड़गे एवं जूनियर इंजीनियर उके को शहर के प्रतिष्ठित नागरिकों द्वारा बार बार निम्न स्तर के निर्माण कार्य की जानकारी देने के बाद भी कोई अब तक ठोस कदम नहीं उठाया गया है, इस से मंशा पर साफ साफ सावलिया निशान लग रहे है ऐसी चर्चा जोर पकड़ रही हैं।

लगभग पिछले ३-४ माह पूर्व से नाली और रोड़ के बीच मे गट्टू लगाने का कार्य बड़ी तेजी से चल रहा है, लेकिन यह कार्य बिना किसी नाप तौल के चल रहा है, गट्टू लगाने के तरीके को देखा जाए तो बारिश में रोड़ का पानी कभी नाली में जायेगा ही नही, साथ ही गट्टू को देखने से ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे गट्टू एकदम घटिया किस्म के वापरें जा रहे है और साथ ही टूटे फुटे गट्टूओ को भी उसी में धकेला जा रहा है, फिर भी संबंधित अधिकारियों के आँख पर कौन सी कानूनी पट्टी पड़ी है ये जाँच का गंभीर विषय हैं ।

सार्वजनिक लोकनिर्माण विभाग के संबंधित उपविभागीय अधिकारी सुनील बड़गे से शिकायत करने पर बताया गया कि कंस्ट्रक्शन कंपनी कैसे भी काम करे कोई फर्क नहीं पड़ता.

इस मार्ग के मेंटेनेंस का काम संबंधित कंपनी द्वारा ही करवा लिया जाएगा, लेकिन नागरिकों कहना है कि कंपनी घाटियां निर्माण कार्य पूरा होने के बाद अपनी जिम्मेदारी से हाथ झटक लेगी, इसका खामियाजा शहरवाशियो को भुगतना पड़ेगा। नागरिकों ने उपविभागीय अधिकारी की कंपनी से साथ साठ-गांठ होने की चर्चा का बाजार जोरो से गर्म है, नागरिकों ने सही काम ना हुआँ तो आंदोलन की चेतावनी भी दी है, इस विषय मे उपयोग किये गए मटेरियल की जांच कर कार्यवाही करने की मांग जिलाधिकारी से की गई हैं।

घटिया सामग्री की जाँच हो

यदि निर्माण कार्य इसी तरह चलते रहा तो, नगरवासियों का गुस्सा कभी भी फुट सकता है, इसके जिम्मेदार कंपनी व विभाग के अधिकारी होंगे, समय आने पर आंदोलन भी किया जा सकता है

– मुन्ना गवली, मनसे जिलाध्यक्ष

बांधकाम की उच्चस्तरीय जांच हो

शिवालय कंस्ट्रक्शन कंपनी व संबंधित अधिकारियों को शहर के जनप्रतिनिधि एवं वरिष्ठ नागरिकों द्वारा बार बार अच्छे काम की मांग होती रही है, लेकिन इनके इस रवैये से पूरा शहर परेशान है, इसीलिए इस काम की वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा जांच कर दोषियों पर कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जाए और जुर्माना भी लिया जाए,

– केशवराव मानकर, पूर्व विधायक, भाजपा जिलाध्यक्ष।

बदले की भावना से की गई सभी कार्यवाईयाँ - डॉ.वाजपेयी

जिला शल्य चिकित्सक डॉ. अमरीश मोहबे की करतुत

बुलंद गोंदिया – न्यू बालाजी नर्सिंग होम का रजिस्ट्रेशन रद्द किए जाने के विषय में डॉ.नितेश वाजपेयी ने कहा है कि यह कार्रवाई बदले की भावना से की गई है। जिला शल्य चिकित्सक ने अपने पद का दुरुपयोग किया है अब जिला शल्यचिकित्सक अपनी ही गलतियों के जाल में उलझने के बाद दबाव बनाने का एक और प्रयास कर रहे हैं जिसमें वे असफल ही होंगे।

२५ दिसंबर को रामनगर स्थित न्यू बालाजी नर्सिंग होम का पंजीयन रद्द किए जाने के विषय को लेकर पत्रकार परिषद में डॉ.वाजपेयी ने कहा कि उनकी डिग्री फर्जी बताई जा रही है, किन्तु सीएस ने न तो विश्वविद्यालय का कोई पत्र भेजा और न ही किसी प्रकार की नोटिस दी यह सरासर गलत है। किसी भी प्रकार की कार्रवाई से पहले १५ दिन की नोटिस दिया जाना चाहिए था। डॉ.वाजपेयी ने बताया कि उन्होंने दीनदयाल उपाध्याय यूनिवर्सिटी रायपुर से बीएएमएस किया है। २४ दिसंबर को ही यूनिवर्सिटी को पत्र भेज दिया गया है। सीएस ने कोविड डेडिकेटेड हॉस्पिटल एवं नर्सिंग होम रजिस्ट्रेशन के लिए २ लाख रुपए की रिश्वत ली और इसका उनके पास सबूत भी है।डॉ. नीतिका पोयम ने ३० हजार रुपए की घूस ली. लेकिन इसके बाद भी उनकी मंशा साफ नहीं थी. डॉ.पोयम ने तो उनके खिलाफ फर्जी शिकायत तक की थी इस फर्जी शिकायत से निपटने के साथ ही कोविड के दौरान दर्ज की गई एफआईआर मामले में भी वे अदालत में बरी हो गए हैं। जिसके बाद अब अपनी खामियों को छिपाने बदले की भावना से नए-नए हथकंडे अपनाकर परेशान किया जा रहा है।

कोविड काल में जब अपनी जान जोखिम में डालकर उन्होंने मरीजों की जान बचाने का काम किया, तब तक ठीक था. अब दबाव बनाने के उद्देश्य से डिग्री फर्जी बताई जा रही है। ये सिर्फ सीएस की पुरानी व्यक्तिगत समस्या है, जिसका बदला लिया जा रहा है. लेकिन वे शांत नहीं रहेंगे. उन्होंने अपनी डिग्री को लेकर यूनिवर्सिटी को पत्र भेजा है. इस भेजे गए पत्र का जवाब जिलाधिकारी, स्वास्थ्य विभाग सचिव को भेजेंगे. उन्होंने सीएस पर अब तनिक भी भरोसा नहीं रहा है. वे इस पूरे प्रकरण में सीएस के खिलाफ मानहानि, मानसिक परेशानी और आर्थिक नुकसान संबंधी दावा भी न्यायालय में पेश करेंगे।

आरटीआई में जानकारी दी है गलत

डॉ.वाजपेयी ने सूचना का अधिकार के तहत नॉन प्रैक्टिस अलाउंस (एनपीए) लेकर काम करने वाले डॉक्टरों की जानकारी मांगी थी. जिसे छिपा लिया गया. उसी तरह गोंदिया शहर के निजी नर्सिंग होम और क्लीनिक की जानकारी मांगी थी. शहर में ५६ नर्सिंग होम के बावजूद ५१ नर्सिंग होम की जानकारी दी गई. शेष नर्सिंग होम को आखिर छिपाने का प्रया क्यों किया जा रहा है. आरटीआई के तहत जानकारी मांगा जाना भी सीएस को नागवार लगा है।

शिकायत-अपील वापस लो, सब ठीक होगा

सीएस चाहते थे कि डॉ. वाजपेयी द्वारा उनके खिलाफ में की गई शिकायतें और अपील को वापस ले लिया जाए. लेकिन ऐसा नहीं हो पाया. क्योंकि सीएस पर अब उनका विश्वास नहीं रहा है. शिकायत और अपील वापस ले लिए जाने की स्थिति में न्यू बालाजी नर्सिंग होम का रजिस्ट्रेशन बहाल करने की बात कही थी। लेकिन सीएस अपने वादे पर अडिग नहीं रहे और इसी वजह से डॉ.वाजपेयी भी अपने फैसले पर अडिग रहे. उन्हें अब शिकायत और अपील वापस नहीं लिए जाने की वजह से दबाव के रुप में सीएस द्वारा कार्रवाई की जा रही है. न्यायलय में जाएंगे उनके आदेशों को लेकर साथ ही उनके खिलाफ मानहानि का मुकदमा भी करेंगे।

शासकीय जिला चिकित्सालय केटीएस में कुंवर तिलक सिंह नागपुरे की जयंती मनायी

दानवीर समाज रत्न कुंवर तिलक सिंह अमर रहे के नारों से गूंजा परिसर

बुलंद गोंदिया – गोंदिया जिले के महान दानदाता व समाजरत्न जमींदार जिनके द्वारा ही गोंदिया जिले के नागरिकों के स्वास्थ्य के लिए शासकीय चिकित्सालय की बुनियाद रख निर्माण किया गया था। जिसके लिए उन्होंने शहर के मध्य में वर्ष १९४८ में १० एकड़ जमीन व १० लाख रुपए दान दिए थे जिसके फलस्वरुप आज भी जिले के हजारों नागरिकों का उपचार यहां हो रहा है। ऐसे दानवीर की जयंती २६ दिसंबर को जिला चिकित्सालय में आयोजित की गई जिसमें सर्वप्रथम उनकी प्रतिमा का पूजन कर माल्यार्पण व मरीजों को फल वितरण किया गया।

इस अवसर पर शासकीय मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ अपूर्व पावडे,डॉ प्रशांत तुरकर, डॉ संजय माहुले, कुँवर तिलकसिंह के वंशज चौतरामसिंह नागपुरे, रेवतिकुमार नागपुरे, विजेन्द्र सिंह नागपुरे, पृथ्वीराज सिंह नागपुरे, टीटूलाल लिल्हारे एड. देवेंद्रसिंह नागपुरे, निरजसिंह नागपुरे, अनिलसिंह सुनिलसिंह नागपुरे, सुनील लिल्हारे, अरविंद उपवंशी, नंदकिशोर बिरणवार, संजय नागपुरे, राजीव ठकरेले,प्रशांत लिल्हारे, गणेश सव्वालाखे, मनीष नागपुरे सचिन बंडे, अमित नागपुरे,विक्की बघेले, कुँवरसिंह बघेले, राजेन्द्र लिल्हारे, दिलीप ब्रम्हणकर, सचिन लोखंडे, कृष्णकुमार नागपुरे, अशोक बिरणवार, श्रीमती उर्मिलाजी नागपुरे, श्रीमती चौताली नागपुरे, डॉ पूर्णिमा नागपुरे एवं बड़ी संख्या में लोधी समाज के बधू और अस्पताल के कर्मचारी उपस्थित थे।

स्वामित्व, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक नवीन माणिकचंद अग्रवाल द्वारा बुलंद गोंदिया साप्ताहिक समाचार पत्र भवानी प्रिंटींग प्रेस, गुरुनानक वार्ड, गोंदिया, ता.जि.गोंदिया से मुद्रित व बुलंद गोंदिया भवन, जगन्नाथ मंदिर के पास गौशाला वार्ड, गोंदिया ४४१६०१, ता.जि.गोंदिया से प्रकाशित । संपादक : संपादक नवीन माणिकचंद अग्रवाल, मो.क्र. ९४०५२४४६६८ । (पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिये जिम्मेदार) प्रकाशित किये गये समाचार व लेख से संपादक सहमत है ऐसा नहीं है । न्यायालय क्षेत्र गोंदिया ।